

ताहा कि पुलांनि वाका कहिल। मंडी ३५० करिलेन हे  
महाराज इनि महारवि महाराजेत यन्नोबर्नना करिते  
चेन अतएव इहार किछु पूजा करा ३८५०कु हय। ताहा  
शुनिया राजा किंकिं कुम्ह इहीरा कहिलेन कि वारं  
इहार पूजा ३८५० कु हय एलोकेर करिताते कि आयार  
ैमनोर अथवा विनेर किछु बृद्धि हहिवे। मंडी ३५०  
करिलेन हे महाराज मैमनोर ३ विनेर पुरीन एल या  
कविर वार्याते मेहे या दीर्घकाल पर्याण्ड पाके ताहा  
कहितें रुद्रारत्नेर प्रथम समझाववि ये॒ राजा गड  
हहियाचेन ताहारा विन नविन्दिगेत पूजा कारऱ्या  
जिलेन उग्निशिते व वराओ मेहे वाले मेहे महल  
नवपतिरन्दिगेत यन्नोबर्नना मवर्द्ध करियाचेन एथन  
कात्र गौडिज्जेराओ मेहे यन्नोबर्नना॒ श्लोक पाठ करिते  
चेन ताहाते मेहे महल राजारन्दिगेत या आदांनि  
पुकाळ पाटिज्जेत उट्टिल ये लोक महल ताहारा  
कानिया हेता शवियाचे कम्ह ताहारा आपत्तात मारेव  
वाहिते परिचित हय नाहि आव येमत ३५० पा.त्रा.  
स्वर्ण पाके एवं गृहिकातेहै वृक्ष पाके मेहे पुकार  
करिय वाकोत्तेहै राजारन्दिगेत या खान नियिते

आनन्दि एই राजेर पूजा करन। राजा ओत्र  
 करिलेन ये यशोवर्णताते विनयम् हय मेइ यशोवर्ण  
 ताते आमार किछु पूर्योजन नाइ परये कहिलेन ओरे  
 आमार निकटस्थ लोकेया तोरा कि देखितेजिस् एই  
 दूराजा परचितानहारक ए आमार देव लहिते इहा करि  
 उजे एই बहुकषे तोरा कि निरारन करिते पारिस् ना।  
 उदनल्लर बेबीरि पूर्खेवा राजार आजा पाईया ए करि  
 राजेर गलेते हात दिया शारेर बाहिधे आनिल। करि  
 राज मेइ अपशानेते अताह दृष्टित हइया पूनर्वार  
 एक करिता पाठ करिलत और अर्थ एই आगि भूति  
 कर्म ये उक्षुआषा करियाछि एवं निदूदिजना सुध  
 तागि करिया बाहुर एवं काय ओलकारादि नान। शास्त्र  
 पाठ करियाछि मे मरुल वृभि हइयाते अथन एই बोवि  
 हइतेजे ये लक्ष्मी नौठन्निया ताहातहि एই मूर्ख राजा  
 हइयाजे हा इहार खामना करिया आमार एই दूर्गति  
 हइल आउव छे बागेवि तुमि आमार निकटहइते  
 द्वारेयाः इहा बहिया करिता मन्नास करिलेन अर्थ  
 करिता ग्रहमाय करिवेन ना एই पुतिजा करिलेन मेइ  
 समये यत्ती बाहिया आसिया ए पतितेर कथा शनिया

रुहिलेन हे कविराज तुमि कि रुहिला आजानेवळ तायार  
 फोदी रुहिया आपनावळ हानि रुहिला शुत ताना रुमेते  
 एवं अलक्षणेते युज्ञा ३५५८ पदेते रुठिता ये रुविता  
 तिसि पञ्चितेवृद्धिगैर मूर्खरु रुहारन हन एवं विदेशे  
 ताना उपकारु रुहेन एषत ये रुविता ताहा तुमि अना  
 नियंत्र लोकेव दोषेते हेन तांग रुहिला पञ्चितेरु  
 अहुःकरन रुपनउ फोपेर आकर हय ना अर्थि पञ्चितेरु  
 अहुःकरने रुपनउ फोपेर जान्ना ना अपद्य येहुत मृती श्री  
 देवताव मङ्गलि देखिया आपनाव रुलविर्य तांग रुहिया  
 रुपतउ देवताव विर्य आ ना मेडे पकार इनदान  
 लोकेव यूर्ध्वे देवदान किम्बा राजा देखिया आपनाव  
 रिद्याव अनुभीत तांग रुहिया यूर्ध्वरु तायार कार्य  
 दहन ना । रुहिलेन हे यस्ति शुनिष्ठा रुहिलेन हे यस्ति  
 राजा आगि एष राजाव मूर्खे निका शुनिष्ठा एवं राजा  
 रुहिलेन हे यस्ति शुनिष्ठा उपास्तु दग्धेते रुविता  
 तांग रुहिलाम । मले इत्यु रुहिलेन एष लिनाते  
 तोम्हा कि हाति ये फोदी लोक आपनाव आजानेत  
 त्रुमुख मात्रु लोकेव लिना करे मे मिना ए लिनाके  
 अहु ताहाते मात्रु तोक लिनित हन ना ।

কুবিরাজকে স্বর্ণ দিয়া নিজগৃহে বিদ্যার কুরি  
লেন। কুবিরাজ এখন পাইয়া কালক্ষেপন করিতে লাগি  
লেন কিন্তু পূর্ব পুতিজানুমারে কুবিতা ঢাঁ তাঁগী কুরি  
লেন তাহাতে পাখিতের বিদ্যা অবস্থা হইল। ইতি  
অবস্থাবিদ্যাকথা ময়োজা ।—

### অপ্ত অবিদ্যাকথা ।—

যে মনুষ্য বাল্যকালে বিদ্যাভ্যাস না করে সেই যাকি  
সকল লোক কৃত্তু নিনিত ইহৈয়া কালক্ষেপন করে এবং  
সে যদি সম্মুদ্র পর্যন্ত পৃথিবীর পতি হয় তপ্তাপি সকল  
লোক তাহাকে যুক্ত বলে। এবং যুর্ধ্বর সম্মতি দেখিয়া  
কোন পুরুষ বিদ্যাতে ওদাসীন হয় নানা রক্তপুরুষ যে মুক্ত  
সে কৃত্তনও পশ্চাদ্বী হয় না। তাহার ওদাহরণ এই ।—

তীর্ত্তুকি নামে এক রাজবীরী তাহার নিকটে কোন  
গ্রামে রবিবীর নামে ক মুক্ত বুক্ষন বাস করেন তিনি  
অতিশয় ইন্দোন ছিলেন কিন্তু তাহার কথা শুনিয়া সকল  
লোক তাহাকে ওদাস করে। তাহাতে বুক্ষন অত্যন্ত  
দুঃখিত হইয়া এক সময়ে টিণা করিলেন যে মনুষ্যেরা  
বহে তামুল মুখের পূষণ কিন্তু আমি বুক্ষ বেশ শুক্ষ

ବାକୀଇ ମୁଖେର ଜୁବନ ।      ମୁଖ ଲୋକ ତାଙ୍କୁ କୁଠା କହେ  
 ଆର ତାହାର ଦୋଷପଣ୍ଡିତ କରିତେ ପାଇବେ ନା ତାହାତେଇ  
 ମରୁଳ ଲୋକ ମୁଖକେ ଓହାମ କୁରେ ଅପରୁ ଯେ ଲୋକ  
 ବାଲାବଦ୍ୟାୟ ବିଦ୍ୟାଜ୍ୟାମ ନା କୁରେ ଏବଂ ଯୌବନାବଦ୍ୟାୟ ଯଶ୍ଚ  
 ମରୁର ନା କୁରେ ଯାତାର କ୍ଲେଶକୁରୀ ମେଇ ପୁଣ୍ୟ ଜନ୍ମିଯା  
 ଏବଂ ପୃଥିବୀତେ ଧୀକିରା କି କାର୍ଯ୍ୟ କୁରେ କିନ୍ତୁ ଆମି ସ୍ଵର୍ଗ  
 ଆମାର ବିଦ୍ୟାଜ୍ୟାମେର କାଳ ନାହିଁ ।      ଯେ କୁର୍ମୀର ଯେ  
 ମଧ୍ୟ ଘରି ମେଇ କାଳେ ଏ କର୍ମ ନା କୁରେ ତାର ମେ କର୍ମ  
 କୁଥନ୍ତି ମିଛ ହୁଏ ନା କେବଳ ଆମ୍ବୋଜନକୁଡ଼ା ଶୋକ ପାଇଁ  
 ଅତ୍ୟବ ଆମାର ପୁଣ୍ୟକେ ବିଦ୍ୟାଜ୍ୟାମ କରାଇ ।      ବ୍ରାହ୍ମନ ଏହି  
 ବିବେଚନା କରିଯା ବିନଦ୍ୟା କରିଯା ପଞ୍ଜିତେ ନିରୁଟେ ମଲଦିନ  
 ନାମେ ପୁଣ୍ୟକେ ଶାନ୍ତାଧୀନେ ନିଷ୍ଠୁର କରିଲେନ । ପଞ୍ଜାବ ମଲ  
 ଦିନେର ନହାଦୀଯାଇ ବାଲକେ । ମଲଦିନକୁ ଅବୁନ୍ଦନ କହେ ।  
 ମଲଦିନ ଏହି ଦୂଷମୋତେ ଆର ପିତା ଆମାର ନାମ ମଲଦିନ  
 ବାଧ୍ୟାକ୍ଷେତ୍ର ଇହାତେଇ ପିତାର କାମିତ୍ତା ପୁଣ୍ୟ ହଇଯାଇଛେ  
 ଏହି ଧେଦେତେ ସରୁ ଦୂଷ ନିରାଗନେର ନିରିତେ ଅତିଶ୍ୟ  
 ଯତ୍କନ୍ତୁବରକ ଶାନ୍ତାଧୀନ କରିଯା ସରୁ ଶାନ୍ତର ପାଇଗା  
 ହଇଲେନ ।      ଅନନ୍ତର ଏ ରଦିଦିନ ବ୍ରାହ୍ମନ ପୁଣ୍ୟର ଉଗେତେ  
 ଆମନି ପାରିବତ ହଇଯା ମଲଦିନ ନାମ ପୁଣ୍ୟକେ ମଦ୍ଦେ ଲଈଯା

राजा के निकट परिलेन। राजा बिविरके कुण्डल  
 वाठा जिजामा करिया कहिलेन मराठारु कह। रवि  
 वीर बुम्हन राजारु मिछ्च वाक्य शुनिया आहुदित हइया  
 आपनारु प्राणिता पुराशेर निश्चिते संस्कृत वाक्योते  
 कहिलेन ये आमारु जान नाही एही अर्पे मर जान-  
 नास्ति एही संस्कृत वाक्य हइते पारे ताहा कहिते ना  
 परिया जानो नास्ति येव एही अशुद्ध संस्कृत वाक्य  
 कहिल। ताहा शुनिया राजा क्षिंडे हामा करिलेन  
 मजुलरा अदीबदन हइलेन ग्रल लोकेरा हामा करिते  
 लागिल। मेरे मराम शर्वर लक्ष्मि इहिया ओपहाम  
 हेराद्याके कहिलेन हे अजान मकल तोमरा हेन  
 आमारु पिताके ओपहाम करितेज आमारु पिता ये  
 वाक्य कहियाचेन ताहारु अर्थ तोमरा बुकिते पार नाही  
 जानो नास्ति येव एही वाक्येर अर्थ शुन जाश्वरेर अर्थ  
 जान नोश्वरेर अर्थ आमारुदिगोर नास्तुश्वरेर अर्थ नाही  
 शाश्वरेर अर्थ लक्ष्मी इवश्वरेर अर्थ मदृश इहाते ममु  
 लायर अर्थ एही आमारुदिगोर जान नाही लक्ष्मीर नाय  
 अर्थ आमारुदिगोर येमठ लक्ष्मी नाही मेरे शत जानও  
 नाही अतएव जाह्नारु पिता आपनारुदिगोर विर्द्धनत

পুরুষ করিয়াছেন। এই অর্থ শুনিতে নভাই লোকেরা  
চমৎকৃত হইলেন রাজা আতঙ্ক মনুষ হইয়া মনবৈরক্তে  
অনেক বিন দিলেন এবং কহিলেন সারু মনবৈর সারু  
তুমি অশুল্ক বাক্যের শুল্ক অর্থ করিলা। কিন্তু এই  
পুরুষ অর্থ করাতে মনবৈরের পাণিতা পুরুষ হইল এবং  
তাঁহার নিতার আতঙ্ক মূর্খতা পুরুষ হইল। পাণিতের  
কহিয়াছেন যে পুণ্য মর্যাদান্তুষ্ট হইলেও নিতার অশী  
দৃ হয় না অতএব মনুষ্য নিজ গুণাতেই সর্বত্র যাচ্ছী  
হন। ইতি অবিদ্যকৃতি সমাপ্ত।

### অপি প্রতিবিদ্যকৃতি।

যে গোকুল কৌল বিদ্যার এক দেশ জানিয়া অর্থাৎ কিঞ্চিৎ  
জানিয়া মেই বিষয়ে আপনার সর্বব্রহ্মতা পুরুষ করে  
পাণিতের সভার মধ্যে মেই লোককে উপহাস করেন  
তিনিশতে মৃগল লোক তাঁহাকে প্রতিবিদ্য কহেন।  
তাঁহার উপর্যাত এই—

গোকুলুর রাজা বানীতে উদয়নির্হ নামে এক রাজ  
ছিলেন তিনি শরৎকালে অগদীশ্বরীর পুজারস্ত করিয়া  
তত্ত্বপূর্ণের নিমিত্তে অনেক বুঝান্তক বরণ করিলেন

मेह मरय उत्तम परिषुद्ध ओ तिलकवीरी एवं० महादात्रिक  
ओ परममुन्दर देवशर्मा नामे एक ब्राह्मण तिनि शुक्र  
पक्षिर नाय॑ कृपकृष्णलि अस्तु श्लोक उठारन करितेजेन  
अर्थात् शुक्र पक्षि येषत् अस्तु श्लोक उठारन करे ताहाय  
अर्थ जाने ना ब्राह्मण॒ मेहे रथ श्लोकोउठारन करिते  
जेन ताहाय अर्थ जानेन ना राजा ताहाके देखिया  
शुक्रानुवर्क चतुर्पाठेर निश्चिते बरग करिलेन । देव  
शर्मा सक्षिल्ल करिया वर्षपात ओ व्यरवर्ण विष्ण्यय॑ करिया चतुर्पाठ  
करिया आपनाय अपरादि मात्रनार निश्चिते एक म००  
मूर्त श्लोक पाठ करिलेन ताहाय अर्थ एই हे मातः एই  
पाठेते ये अक्षर पतित हइयाजे एवं० मात्राहीन  
हइयाजे तन्निश्चिते आमार ये अपरादि हइया थाके  
ताहा क्षमा करिते तुष्टि योगी ह॒ एই श्लोकेर श्वेष  
क्षमा करिते योगी ह॒ एই अर्थे क्षमा महसि एই  
म०० मूर्त वाक्य हइते पाठे ब्राह्मण ताहा ना कहिया क्षमा  
महस एই वाक्य कहिलेन । मेहे मरय शुभदिव नामा  
राज पुरोहित कहिलेन हे देवशर्मा तुष्टि अस्तु कृ चतुर्पाठ  
करिया मेहे अनुच्छ मरयादाने आपनाय अपरादि मात्रनार

নিয়মিতে পুনবর্বার অঙ্গকু কৃবিতা পাঠ করিলা। এ তোমার  
বড় মূর্খতা। সরুল বুঝন এই কৃপা শুনিয়া দেবশৰ্ম্মাকে  
নিন্দা কৃতিতে লাগিলেন। ঘরে রাজা কহিলেন যদি এই  
বুঝন কৰ্ম্ম নিবর্বাহ কৃতিতে না পারিবে তবে কেন ইহাতে  
পুরুত হইল অতএব এই বুঝন অতি মূর্খ ও নিজাত  
অধিক্ষিক পুরীন লোকেরা কহিয়াছেন যে লোক অপৰ্যাপ্ত  
শাস্ত্রে আপনার বুদ্ধিমত্তা পুরুষ করে সে সভা যথে  
বিন্দিত হয় এবং প্রতিবিদ্য নামে ধ্যাত হয় আর এ  
নিন্দা সেই প্রতিবিদ্য লোকের মতু হইতে অবিক দৃঢ়ৎ  
দায়িনী হয়। ইতি প্রতিবিদ্যকৃপা সমাপ্ত।—

### অপ হাসবিদ্যকৃপা।—

যে লোক অন্দের ও বাক্তার বিকৃতিমারা বিনিরন্দিণীকে  
হাস্যাযুক্ত করে সেই পুরুষ সর্বত্র হাসবিদ্য করে ধ্যাত  
হয়। তাহার ওপর এই।—

কাণ্ডীপুরীতে সুন্দরাপ নামে এক রাজা পাকেন। সেই  
নগরীতে ঢাকি ঢোক কেন বিনবানের ঘরে সিঁবি দিয়া  
অনেক বিন চুরি করিয়া পথে ঘরের বাহিরে আইসে  
তখন নগরীর কেরা সিঁবির হারে এই সরুল দুর্ব্যোর সহিত

ଏହି ଅକୁଳଟଙ୍କେ ସିରିଯୋ ନରପତିର ନିକୁଟେ ଓ ପମ୍ପିତ କରିଲ ।  
 ରାଜା ତାହାରଦେର ବୃତ୍ତାନ୍ତ ଶୁଣିଯାଇଚାରିବାରା ତାହାରଦିଗେ  
 କେ ତୋର ଅବସୀରିତ କରିଯାଇଥାରୁ ପୂରୁଷେରଦିଗେକେ ଆଜ୍ଞା  
 କରିଲେନ ଯେ ଏହି ତୋରଗୀଳକେ ଶୂଳେ ଦିଯା ନନ୍ଦ କରଇ । ଦତ୍ତ  
 ପତି ଶାର୍ଵବେତାରୀ କହିଯାଇଛେ ଯେ ଶିଖ ଲୋକେର ମମୁଳନୀ  
 ଓ ଦୁଷ୍ଟଲୋକେର ଦଧନ କରା ରାଜାର ଦିର୍ଘ । ଅନନ୍ତର ନର  
 ପତିର ଆଜାନୁମାରେ ଘାତୁଳ ପୁରୁଷେରା ଏ ତୋରଗୀଳକେ ନଗୀ  
 ରେ ବାହିରେ ଲାଇଯା ତାହାରଦେର ତିନ ଜନକେ ଶୂଳେ ଦିଯା ନନ୍ଦ  
 କରିଲ । ମେହି ମଯାଯେ ଟତୁର୍ଯ୍ୟ ତୋର ଚିନ୍ତା କରିଲ ଯେ ମରନ  
 ନିକୁଟୋପମ୍ପିତ ହଇଲେ ଆଆ ରକ୍ଷାର ଓପାଇଁ ଚିନ୍ତା କରୁଥାଏ ହୁଏ  
 କିନ୍ତୁ ଲୋକେର ମୃତ୍ୟୁ ହଇଲେ ସକୁଳ ଓଦ୍ୟାଗୀ ନିଷ୍ଠା ହୁଏ ଆପର  
 କୋନିହ ଲୋକ ବାଧିତେ ପିତ୍ତିତ ହଇଯା ଏବଂ ରାଜଦଣେ ଶ୍ରୀମଦ୍  
 ମାଣ ହଇଯା ଯଦି ଆଆ ରକ୍ଷାର ଓପାଇଁ କହିତେ ପାରେ ତାବେ  
 ମେହି ଶ୍ରୀମାଣ ଲୋକ ଯମେର ହାରହିତେ ଛିରିଯା ଆଇଦେ  
 ଅତ୍ୟବ ଆଆ ରକ୍ଷାର କୋନ ଓପାଇଁ କରି ଇହ ଶିର କରିଯା  
 କହିଲ ଓ ଘାତୁଳ ପୁରୁଷ ସକୁଳ ତୋଷରା ଆମାରଦିଗେର ତିନ  
 ଜନକେନନ୍ଦ କରିଯାଇ ପକ୍ଷାନ୍ତ ନନ୍ଦ କରି ତାହାର କାରନ ଏହି ଯେ  
 ଆମି ଏକ ଓତୁମ ବିଚାର ଜାନି ଆମି ପକ୍ଷତ୍ତ ପାଇଲେ ମେହି

ବିଦ୍ୟାର ପୁତ୍ରାର ପାକିବେ ନା ଅତେବ ଆଶି ମେଇ ବିଦ୍ୟା ରାଜ  
ହେ ଶିକ୍ଷା କୁରାଇବ ତାହାରଙ୍କେ ତୋଯରା ଆଶାକେ ନକ୍ଷ କରିଓ  
ତଥାପି ପୂର୍ବିବୀତେ ମେଇ ବିଦ୍ୟା ପାକିବେ ।      ଧାତୁକେରା ଏହି  
କୃପା ଶୁଣିଯା କହିଲ ୩ ଚୋର ତୁହି ଅତି ମୂର୍ଖ ବଦିଶୀନେ  
ଆମିଯାଓ ଏଥିନ ସୀଂଚିବାର ଇଛା କରିତେଜିମ୍ ତୁହି ନରବିମ୍  
ରାଜା କେନ ତୋର ବିଦ୍ୟା ପୁରନ କରିବେନ ।      ଚୋର ପୁନଶ୍ଚ  
କହିଲ ଯେ ଧାତୁକେରା ତୋରା କି ରାଜାର କାର୍ଯ୍ୟ କ୍ରତି କରିବି  
ଯାଇ ରାଜା ଶୁଣେନ ଉବେ ଅବଶ୍ୟ ଏହି ବିଦ୍ୟା ପୁରନ କରିବେନ  
ହରଙ୍କ ରାଜା ତୋରଦେର ପୁତ୍ର ତୁଳ୍ପ ହଇୟା ଅନୁଗ୍ରହ କରିବେନ ।  
ଧାତୁକେରା ତୋରେର କୃପାକ୍ଷମେ ରାଜାକେ ଏହି ବିଦ୍ୟାର ସମ୍ମାନ  
କହିଲ ।      ରାଜା ତାହା ଶୁଣିଯା କୌତୁକାର୍ଥେ ମେଇ ଚୋରକେ  
ତାକିଯା ଜିଜାମା କରିଲେନ ଓରେ ଚୋର ତୁହି କି ବିଦ୍ୟା  
ଆବିମ୍ ।      ଚୋର କୃତାଙ୍ଗଳି ହଇୟା ନିବେଦନ କରିଲ ଯହା  
ରାଜ ଆଶି ମୁରଗକ୍ଷି ବିଦ୍ୟା ଜାନି ।      ରାଜା ତାହା ଶୁଣିଯା  
କିମ୍ବିନ୍ ହୀନା କରିଯା କହିଲେନ ଏ ବଡ଼ ଆଶ୍ଚର୍ଯ୍ୟ ।      ଚୋର  
ନିବେଦନ କରିଲ ହେ ରାଜାଦିରାଜ ଏକ ମର୍ବନ ପାରିଯିତ ମୂର  
ବେରେ ବୀଜ କରିଯା ନିଯୁତ ଏତ ମୃତ୍ୟୁକ୍ଳାୟ ବୁନିଲେ ଏକ ମାମେତେ  
ଏ ବୀଜ କଲ୍ପନା ଲାଗୁ ଅତି ମୂଳ ହଇବେ ତାହାର ବୃକ୍ଷତେ  
ଏକ ପଳ ପାରିଯିତ ମୂର୍ବନ୍ତୁ ମୁହଁ ହଇବେ ଏହାର ରାଜ ଆମନି ଦେଖି

ताइ जानिते पारिवेन। राजा आश्चर्य बोध करिया  
 कहिलेन ओ ठोर इहा सत्ता। ठोर गलवन्न ओ कृता  
 खुलि हइया ओउर करिल ये महाराजेर समूहे के मिथ्या  
 कहिते पारे यदि आशार कपार किछु अनुरप्त हय उबे  
 एक योसेर पंख आशार पूर्ण दण करिवेन एवं यदि  
 सत्ता हय उबे आशार पूर्ति अनुग्रह पुकार करिवेन।  
 राजा छोड़क देखिवार निमित्ते कहिलेन ये ताहा  
 कर। अनुउर ठोर मर्वकार द्वारा सुर्वरेर मर्वने निमित्त  
 बीज निर्माण करिया राजार अनुग्रह पूर्व मर्दी कीजामरोब  
 ये निष्ठेडे भूमि परिष्कार करिया निवेदन करिल हे  
 महाराज मरुल पुस्त हइयाक्षे मस्तुति एই बीज बनत  
 रहा कोन लोकके दिते आज। हठक। राजा कहिलेन  
 उटे बीज बनत कर। ठोर ओउर करिल हे महाराज मर्व  
 बीज बुनिते आशार अदिकार नाई यदि अदिकार पाकित  
 उबे एयत विद्या जानिया आमि दृष्टपी हइताम न। ये  
 लोक कृपन कोन दुर्य ठुकि ना करिया पाकेन तिनि एই  
 बीज बुनिते पारेन अउपर महाराज ए बीज बनत करन।  
 राजा किञ्चिं राल जारना करिया कहिलेन ये आमि  
 मन्यासिरुदिनीके द्वितीय निमित्ते निडारु निष्ठेडे हइते किछु

ଦିନ ଲାଇୟା ମନ୍ୟାମିଗିରକେ ହିଂକିଥ ଦିଯାଜିଲାମ୍ ହିନ୍ଦୁ ମାନ୍ଦି  
ଲାଇୟାଜିଲାମ୍ ଏ କାର୍ଯ୍ୟଓ ଏଣ୍ ପୁଣ୍କାର ଚୁରି ହୟ ଅତ୍ସବ ଆମି  
ବୀଜ ବନ୍ଦ କୁରିତେ ପାରି ନା । ତୋର ଏଣ୍ କୃଥା ଶୁନିଯା କୁହିଲ  
ତବେ ଯନ୍ତ୍ରୀ ବନ୍ଦ କୁବନ । ଯନ୍ତ୍ରୀ କୁହିଲେନ ଆମି ରାଜକୀୟ  
ବାଧ୍ୟାରେ ନିୟକୁ ଆଛି କି ପୁଣ୍କାରେ କୁହିର ଯେ ଆମି କୁଧନ  
ଚୁରି କୁରି ନାହିଁ । ନରେ ତୋର କୁହିଲ ତବେ ଦୀର୍ଘାବିକାରୀ ବୀଜ  
ବନ୍ଦ କୁବନ । ପଞ୍ଚାମୀ ଦୀର୍ଘାବିକାରୀ ଡତର କୁରିଲେନ ଆମି  
ବାଲ୍ୟଦାଳେ ଶାତାର ମୂର୍ଚ୍ଛି ମୋଦକ ଚୁରି କୁରିଯାଜିଲାମ୍ ।  
ତୋର ଏହି ମରୁଳ କୃଥା ଶୁନିଯା କୁହିଲ ହା ଯଦି ଆମନାରୀ  
ଅବୁଲେଇ ଚୁରି କୁରିଯାଜେନ ତବେ ଫେଲ ଆମାର ପୁଣ୍କ ଦେ  
ଫେନ ହା । ମତୀମ୍ବ ମରୁଳ ଲୋକ ତୋରେ କୃଥା ଶୁନିଯା  
ହାମ୍ବ କୁରିତେ ଲାଗିଲେନ ଏବଂ ରାଜାଓ ହିଂକିଥ ହାମ୍ବ  
ମଞ୍ଜିଗିଗେର ପୁତ୍ର ଅବୁଲୋକନ କୁରିଯା କୁହିଲେନ ଓ ମଞ୍ଜିଗିନ  
ଏହି ତୋର ଦୁର୍ବୁଦ୍ଧି ହଇୟାଓ ବୁଦ୍ଧିମାନ ଏବଂ ହାମ୍ବ ରମେ  
ପୁରୀନ ବଟେ ଆତ୍ସବ ଆମାର ଲିକୁଟେ ପାକୁଣ ପୁମର କ୍ରମେ  
ଆମାରେ ମନ୍ତ୍ରକ କୁରିବେ । ରାଜାର ଆଜାତେ ତୋର ବିପରୀ  
ହିତେ ଶୂକ୍ର ହଇୟା ନରପତିର ଲିକୁଟେ ପାକିଲ । ମେଇ କାଳେ  
ମରୁଳ ଲୋକ ବିବେଚନା କୁହିଲେନ ଯେ ମଂସାରେ ମାତ୍ରୀ ତୋର

হইতে অধীক্ষিত কৈ নাই মেই ঢার হাসবিদ্যাতে আনন্দ।  
মৃত্যু বাবন করিয়া রাজাৰ পুরোত্ত হইল অতএব হাস্য  
বিদ্যা আন্দৰ উপবিদ্যা হইতে উন্ময়। ইতি হাসবিদ্যুক্তি  
স্মাঞ্জ।—

বৌ অপ্ত বুদ্ধিহীন এবং বুদ্ধিযুক্ত অপ্ত বীর্যহীন  
এই দুই পুরুষ পুরুষের দিগোৱ মুক্তি সকল গুনু বাস্তু  
ভয়ে কহিলাম না আন্দৰ পশ্চিমে গুনুভূতে কহিয়াছেন।  
বিদ্যা ও বুদ্ধি আৰু বীরত্ব পুত্রতি উন্ময় কৃত সকল সন্তু  
কথে এক বাক্তিতে পাকে না এই সমুদ্রায় সামগ্ৰীৰ বাদীৱ  
বৈলোচনেৱ মধ্যে তিন পুরুষ আছেন অর্থাৎ বৃক্ষ। এবং  
বিষু ও শহেশ্বর এই তিন পুরুষোত্তমেতে সহর্ষণ সকল  
কৃত সন্তু কথে পাকে। কিন্তু ভূমণ্ডলেৱ মধ্যে আন্দৰ  
লোকহইতে শিৰমিৰ রাজাতে অনেক কৃত আছে  
এবং শিৰমিৰ রাজা নারায়ণতুল্য ও শিৰতুল্য কথে  
শুকাণ পাইতেছেন তাহাৰ বিবৰণ এই লক্ষ্মীশ্বৰেৱ দুই  
অর্থ নারায়ণেৱ স্বী আৰু দৈন নারায়ণ লক্ষ্মীপতি শিৰ  
মিৰ রাজা দিনম্বামৈ হইয়া লক্ষ্মীপতি এবং নারায়ণ  
কৃতৰ্বন্ধ শিৰমিৰ রাজা কৃতৰ্বন্ধ এই সকল সমান কৃতে  
শিৰমিৰ রাজা নারায়ণ সদৃশ হইয়াছেন আৰু শিৰমিৰ

राजा शिवतुला कर्णे प्राप्त होयाजेन ताहार विवर  
महादेव मरवज्ञ शिवसि०-ह राजा सकल शीघ्र ओ सकल  
कार्य आनेन अतएव मरवज्ञ महादेव मरवान्दे विभूति  
वारन करेन एই कार्य विभूति भूषितादि शिवसि०-ह राजा  
मरवान्दे अलक्षार परिवान करेन अतएव विभूति भूषि  
तादि आर महादेव वृषेर उपरे अद्विति करेन इहा  
लै एव वृष्मित शिवसि०-ह राजा निरल्लर विमर्श वर्ष्य नियुक्त  
थाकेन अतएव वृष्मित एই सकल तुला कारनेते  
शिवसि०-ह राजा शिवतुला ।—

इति मरम्भ पुरुरने विराज्यान एव० नारायणतुला  
शिवतुलिपरायन महाराजादिराज आशिवसि०-ह राजार  
आचानुमारेव विद्यान्ति पतित कर्त्तुर विरचित पुरुष परिका  
श्चेन्द्र मविद्यपुरुष परिचायक तृतीय परिच्छेद ।—

महाराज शिवतुलिपरायन पुनर्वर्दीर जिजासा करिलेन  
ते युनि तोमार उपदेशेते नानापुरुष पुरुषेरुदिग्धाले  
आनिते नारिलाय फिन्दु पुरुषस्त्रेर हि फल ताहा शुनिते  
ईडा करि । युनि उत्तर करिलेन आगि पुरुषे पुरुष  
सक्षनेऱे शब्दोइ रुहियाछि यिनि पुरुषार्प्युक्त हन तिनि

ପୁରୁଷ ଆତ୍ମଏ ମେଇ ପୁରୁଷାର୍ପିତ ପୁରୁଷଟେର ଏଳ ଜାନିବା ତାହାର  
 ବିଶେଷ କୁହିତେଜି ଦିର୍ମା ଏବଂ ଅର୍ଥ ଆର୍ଯ୍ୟ କାମ ଓ ଯୋଗ  
 ଏହି ଚାରି ପୁରୁଷ ପୁରୁଷାର୍ପ ଏହି ମରୁଲେର ମରୀ ପୁରୁଷତ ଦିର୍ମେର  
 ବିବରନ କୁହିତେଜି । ବେଦବାଣୀନୁମାରିକ ଦାନ ଏବଂ  
 ଆଧ୍ୟତ୍ମିକ ପ୍ରଭାଵ ପ୍ରଭାବ ଯନ୍ତ୍ରେ ଅଭୋକ୍ତମାଦିକୁ  
 ହୁଏ ମେଇ ମରୁଲ କର୍ମେର ନାମ ଦିର୍ମା । କିନ୍ତୁ କୋନୀ ପଣି  
 ତେବୋ କୁହେନ ଯେ ଏ ମରୁଲ କୁର୍ମାଜନ୍ମ ଯେ ଅନୁର୍ବ ତାହାର  
 ନାମ ଦିର୍ମା । ରାଜୀ ପୁନଃକୁ ଜିଜ୍ଞାସା କରିଲେନ । ଏ ମୁଣି  
 ମେଇ ଦିର୍ମାବିଷୟେ ଆଶାର ଅନେକ ମନ୍ଦେହ ଜନିଯାଏ । ଏତେ  
 ଏବ ତୁମ ଆଶାର ମେଇ ମନ୍ଦେହ ଦୂର କରିଯା ଦିର୍ମାର ବିବରନ  
 କୁହ । ମୁଣି ଜିଜ୍ଞାସା କରିଲେନ ତୋମାର କି ପୁରୁଷ ମନ୍ଦେହ  
 ତାହା କୁହ । ପରେ ରାଜୀ କୁହିତେଜେନ ଚାରିବାର ପୁରୁଷ  
 ଅନେକ ବୌଦ୍ଧ ପାଦାର୍ଥ ଆଜେ ଏବଂ ନୈତିକ ଆର୍ଯ୍ୟ ରୂପ ଓ  
 ପୁରୁଷ ପୁରୁଷ ଅନେକ ତୀର୍ଥବାସିତା ଆଜେନ ପୁରୁଷାର୍ପିତ  
 ମତ ବିରୋଧି ଯେ ମିଛାତୁ ତାହାଇ କୁହେନ । ଆର୍ଯ୍ୟ ମରଦା  
 ବସତ ରକ୍ଷା କରେନ ମେଇ ସମ୍ମତ ରକ୍ଷାର ନିଶ୍ଚିତ୍ତ ନାନା ରୂପ  
 ରୂପାଙ୍କ କୁହେନ ଏହି ମରୁଲ ନାନା ପୁରୁଷ ରଖାତେ ଓ ଭିନ୍ନ ଶତେ  
 ତ ବିଶେଷ ବିଷୟେ ଆଶାର ମନ୍ଦେହ ଜନିଯାଏ । ଅନ୍ତର ପାଦାର୍ଥ

मरुल परमत धन्त किया आपने मत रक्षा करे एवं  
 ताहारा वेदवेतांर्दिगोर मतेर हेष करे आर वैदिक्षे  
 या ओ दर्शनवेतांया ए पांचतेवादिगोर मत धन्त करेन।  
 अतएव एই मरुल तिनी यत पुकाल क्षेपे परम्पर वाहूक्ष  
 ताहार कोलाहलेते अतात दुष्क्रियानेन्द्र बुद्धि भूम  
 हय एই प्रमुख उपमायादिते शुद्धाओ हयना! मूनि राजार  
 कु शुनिया ओउर करिलेत हेहाजन तुशि केन एत  
 नह ताहार्दिगोर मे पथ मेहि पथेते चल।  
 देख एक ये विदाता तिनि मरुल वस्त्र सृष्टि करियाजेन  
 एवं मेहि नक्कलेर मध्ये प्रत्यक्षे विशेषै विर्म निरपेन  
 किया जेन किन्तु ताहार इहाते तुशि ये वंशे अनियाद  
 मेहि वंशे परम्परापदिक्षि ये विर्म निरक्षर मेहि विर्माचरन  
 कुह ताहाते तोयार विर्मसद्य इहेवे यहि ताहार  
 लग्यापि कुह तवे तोयार विर्म इहेवे इहाते पदि विर्म  
 कि प्राप्ति ताहा शुनिते तोयार नितात वासना इहया  
 पत्ते तवे आयार विपात्य मनोयोगि कुह। ३१ पथ  
 आजे ताहार मध्ये वदम तावलम्हि प्रकषेदत्ते य ना  
 मेहि अत्युद्यम एवं तर्हा दुलिलेते अति दुर्वारुष्मि

ପାତ୍ର ମହିଳ ଡାକ୍ତାରୀଙ୍କ ମେଇ ପଥେତେ ଗମନ କରିତେଜେଲ  
 ଅନ୍ତର ପାହାଟେ ଅର୍ଥାଏ ଯେ ମହିଳ ଶାସ୍ତ୍ରର ମଧ୍ୟେ ଆକ୍ଷେପ  
 କରିବାରେ ତାର ଜୋତିଶାସ୍ତ୍ର ପ୍ରକାଶ କରିତେଜେଲ ତାହାର ଛଳ  
 ମାକ୍ଷୋ ଚନ୍ଦ୍ର ଓ ମୁର୍ଯ୍ୟେ ପ୍ରଥମାଦି ହିତେଜେ ଆର ଦଶୀକରଣ ଓ  
 ଆକରଣ ପ୍ରତ୍ଯେ ଛଳ ମାତ୍ରିକ ଏବଂ ମହିଳ ମନେହ ନାଶକ  
 ଉତ୍ସାହ ଆଜେନ ଆର ପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷ ଫଳକ ବୈଦ୍ୟାକ୍ଷାସ ଆଜେନ  
 ଏହି ମହିଳ ଶାସ୍ତ୍ରକୁ ଅଧିକ ବେଦେର ଅବିରୋଧୀ ଯେ ପଥ ମେଇ  
 ପଥେ ଗମନ କରିଲେଇ ଦିର୍ଘମଧ୍ୟ ହୟ ରାଜା ଏହି ମ  
 ଦେଖ ନାହିଁ ମୁନିକୁ ପୁନର୍ବାର ଜିଜାନା କରିଲେନ ମୁନି  
 ଜୀବାମିରାଦ୍ଵାରା ନାନାପୁକ୍ଷାର ମତ ଆଜେ କେହ ଶିବେର  
 ଆପଦିନ କରେନ କୋନ୍ତେ ପୁରୁଷେରା ନାରୀଯିନେ ତପ୍ରମାଣ  
 କରେନ କେହବା ବୁଝାର ତପ୍ରମାଣ କରେନ ଆତ୍ମର ଏହି ମହିଳ  
 ଦେବତାର ମଧ୍ୟେ କୋନ ଦେବତାଟେ ଯନ୍ମହମ୍ମେଗୀ କରିବ  
 ଏହି କମଳାମନେହ ଓପରିତ ହିୟାଜେ । ମୁନି ରାଜାର  
 କୃତ୍ତିମ ଶୁନ୍ମା ପୁନର୍ମଳ ଓତ୍ତର କରିଲେନ ଯେ କୋନ୍ତେ ପଞ୍ଜିତେରା  
 ଯହାଦେବକେ ଈଶ୍ୱର କହେନ କୋନ୍ତେ ପଞ୍ଜିତେରା ନାରୀଯିନେ  
 ଈଶ୍ୱର କହେନ ଏବଂ କେହି ବା ବୁଝାକେ ଈଶ୍ୱର ବଲେନ ମେଇ  
 ମରନେର ଘତ ଏକ ତାହାର କାହିଁନ ଏହି ତାର୍କିକ ପଞ୍ଜିତେରା  
 ନାରୀର ଏକ ଈଶ୍ୱର ଆଜେନ ଦିତୀଯ ନାହିଁ

মেই যে ঈশ্বর তাঁহার কোনহ মুক্তিতে যনঃমংযে,  
কঠ উবে তোমাঁহ তাঁহ দূর হইবে। ঈশ্বরেতে যন  
মংযোগী হওনের কারণ কেবল বিমা মেই বিমা যে পুকার  
তাঁহ শুনহ ওপরাম ও পুজা এবং দান আৱ যাগিনি  
কঠ যে ঈশ্বরের আৱবিনা মেই বিমা যে পুরুষ মেই সকল  
বিমাচরণ কৱেন তাঁহার নাম বাস্তিক। মেই বাস্তিক  
তিন পুকার সাহিত্য ও তামস আৱ আনুশ্চৌ ইহীৱদিগেৱ  
পৃষ্ঠত সাত্ত্বকেৱ রূপা পুসন্ধ কৱিতেজি।—

### অপ সাহিত্যকৃপা :—

মিথিলানগীৰিতে বোধি নামা এক কাঁচুহ তিনি নিৰক্ষুৱ  
মহংশজাত লোকেৱ যৰ্ণবা রক্ষা কৱত রাজকীয় ব্যাপাৱ  
কৱিয়া নিজনাৰিবাইবৰ্গ পুতিমালন কৱেন কিন্তু কোন  
আবেৰ হিমা কৱেন না এবং পৰবিন দ্যুহন ও পৈৱন্ত্ৰী  
কৱেন কৱেন না কেবল পুতুলত দিনেতে আক্ষোহবৰ্গেৱ  
পুতিমালন ও পুনাৰ্কৰ্ম কৱিয়া কান্দ্যাপন কৱেন আৱ  
শুদ্ধেৱ কৃত্তব্য যে ঈশ্বৰ পুজা তাঁহ সববদা কৱেন এবং  
আপনার ওপৰান যত দাস ও বৃক্ষবেৱে মেল কৱেন  
এই কাময় এই কথে বিজু কানযানন কৱি।

इते निवृत्त हइया निरक्षर शिवनुजापरायां हइया  
 कालक्रेपन करित्त लागिलेन। अनुक्तर चरमकाल निरुद्ध  
 हइले मेहि कायम् पूरानेव एक कुविता शुभन करिलेन  
 ताहार आर्थ एই गंगाद्वीरुहियाजेन ये परहिंसा ओ परह  
 दुष्य गुहन आर छरदारपर्वा एই मक्कल कार्येते पराँ  
 त्तुथ ये पूर्णबान पूर्व तिनि फोन मयये आम्यार निरुटे  
 आमिया आशाके पवित्र करिवेन। ऐ कायम् एहि बाक्कोते  
 पतय करिया विवेचना करिलेन ये आमि जन्मावार  
 काल पर्यात्कुरथन परहिंसा ठार नाहि एवं पं  
 हरन ओ परम्प्रीगमन करि नाहि याहि काहार अनिष्ट एवि  
 नाहि एवं आपताह कार्य अनुजान करिया यित्रवर्णि। हित  
 कार्य करियाचि आर एकुचित्त हइया मुखउया कार्य करिया  
 कालणपन करियाचि। उवे समृद्धि गंगाद्वीरुह बाक्कोर  
 परीक्षाकेन ना द्वारे एই परामर्श करिया गंगातीरे याइवार  
 उद्दोगी करिया गंगातीरेर एक फोर्शेर मठी ओपमित  
 रेया एवं मेहि छाले अनुकूल थाकिया पूरानेव मेहि  
 क्षीकरे दूष्य चरन आर स्वकृत दूष्य चरन ओउर एकुचि करिया  
 करिण गाठ करिलेन ताहार आर्थ एই परहिंसा ओ  
 दुष्य हरण ओ मो एक ब्राह्म एहि मक्कल कर्मेते आमि

प्राप्ति हे देवि सत्त्वति तोमार निकटे आमिया।

शब्दित है। गीतादेवी एই कथा अनिया एवं काम  
सेर भक्ति दृढ़तानुभव करिया परमाहान्तर्बद्ध कुलम्  
तामेते तोर तरी करिया ऐ काम्हर निकटे गिया एवं  
कूर्म मीन मरुर शिशुरायुज्य ये पुराह ताहार विवल जन  
दीर्घाते कायम्हके दून कराइलेन। मेहि काम्ह विदी  
तार अवदीरित ये आनंद परमायु ताहा असूर्व हउयाते  
जले देह तांग करिया स्वर्णे गोलेन। मेहि गीत  
शैशोत्तमात्र एवं गीताव महिमा परीक्षण ये कर्म<sup>३</sup>  
त्ते एके सावृलोकेन। अद्यापि पुर्णंमा करितेचर  
अताव रुहि ये मरुल लोकेन शरीर तक्त हय एवं विन  
तक्त हय ओवज्ञर्ग तक्त हय किन्तु उम्मा गांति कृपन्त  
नक्त हय ना। इति सात्त्विकृक्षा मर्यादा। —

### अथ ताम्नकथा ।—

ये त्रुक्ष विषय विवेचना करिया उक्षनां शाहमन्तु  
इमार्थात्रन करेन एवं साताविक उमोउन्नयुक्त हन उंहाय  
नाम ताम्न विमिक। ताहार विवरन एই ।—

रात्रानगीरीते शारण्तुक्त्रीगियन । एवं नि अक्षया

ও নৌতিজ্জ এবং কুবি ছিলেন। এক সময়ে মেই  
রুক্ষন পুঁথকালা বিশিষ্ট বিদ্যার ছল লাভ ও পুশুমা  
লাভের নিয়মে রাজার দিগন্ধে মহিত মাস্তা করিতে  
নামাদেশ ভুমন করিয়া পুঁথাগতীর্থ ও পুশুমা  
জনপ্রদ সুপ্রসূত মহিত কুমুর এ গোকু ঘূনুত্তু  
মহিমের নিবটে উরেছ এক গোকু বিদিয়া জলে মগু করে।  
রুক্ষন এ কুণ গোকু দেখিয়া কুবনাযুক্ত হইয়া চিন্তা  
কাঙ্ক্ষ লাভিলেন যে পুঁথাগোকু পুনাতীর্থ তাই এবং  
মুরগুইন মহার ন্যায় ও কুণ পুনুর কাল আর নাই ও ন্যু  
পুনুর কুকু হইতে অবিকু বিম্ব নাই গুন্তু ত দুণ জনক সকল  
বিদ্য এক স্থানে দেখিতেছি ইহা তাগ কুরা ও পুনুর হই  
না অতএব কুমুরের মুঁথ হইতে গোকুকা করিব নশ্বর যে  
শরীরে তাহাতে এবিদিয়াম্বি পুন্য লাভ হয় উবে কোন  
ভুক্ত কাল আছা তাগ করে অপর এই গোকুকা কুণ যে  
শার্য সে পরীমার্শের কাল বিলম্ব মহা করে না এবং  
তীত হইলে আমাৰ কোন ছল লাভ হইতে পারে  
নশ্বর পর কেবল রুক্ষন কৈবল বিম্বতে শুল্ক করিয়া এবং  
আপনার জীবন তুল আন করিয়া জলমধ্যে কুন্ত দিলেন

आर उंसनां<sup>१</sup> कुट्टीरेर मुग्धे एक अन्नायात रुरि,  
 कुट्टीर मेइ अन्नायातेर बेदनाते कुपित हइया अन्नप्रसु  
 गोक्के तांग रुरिया बुङ्कनके दिल । गो कुम्भीरेर  
 मुग्धहिते परित्रान पाइया दूरे तीलायन रुरिल । परे  
 कुट्टीर बुङ्कनके नष्टकर्त्ता आउएव जीबेडुदिगोर भम्भ  
 रुर्म्मेर फल ये उद्दातदु ताहा काल विशेषे इठां<sup>२</sup> उपस्थित  
 यु एव<sup>३</sup> केह ताहा निवारन रुरिते पारेन ना देख गो  
 कुम्भीरेर मुग्धहिते रक्षा पाइया मुग्धी हइल निवारुर  
 बुङ्कन पूर्वकृत कर्म्मेर फले केवल पर्यालोके कुट्टीर  
 प्रसु हइया पुन तांग रुरिलेन । किन्तु गोरक्षा जन  
 पूरोते ऐ बुङ्कनेर मस्तके देवताया पूर्वकृति रुरिलेन ।  
 बुङ्कन देह तांग रुरिया पूनर्वर्त्ति दिय पर्यारेर परिग्रह  
 रुरिया भर्गे गोलेन । पूयागवासि पत्तितेरा बुङ्कनेर  
 अद्वृत कर्म्म देखिया दिन्य<sup>४</sup> रुरिते लागिलेन एव<sup>५</sup> विहे  
 ठन रुरिलेन ये वीरे पूखधेरा चिरकाल परिशुद्ध करिय  
 य पूनालात रुरिते अस्त्र इन एह माइसी बुङ्कन  
 रुरितु पूपुक मेइ पूना ओ यश लात रुरिलेन । ई  
 तांगमरुपा समाञ्जा ।—

## ଅଧ୍ୟାତ୍ମଶିଖ୍ୟ ।—

ଯେ ପୁରସ ପୃଥିବୀ ପାପ କରିଯା ପଞ୍ଚାଂ ତାପ୍ୟକୁ ହଇଯା ମେଇ  
ନାପଛିଏତେ ନିବୃତ୍ତ ହେ ଏବଂ ଶେଷେ ଉପମା କରେ ପଣ୍ଡିତରା  
ମେଇ ଦୀର୍ଘିକେର ନାମ ଅନୁଶ୍ଳୟ କହେନ । ଇହାର ଇତି  
ଶାସ ଏହି ।—

ଗନ୍ଧାତୀରେ କାନ୍ଦିଲ ନାମେ ଏକ ନଗର ତାହାତେ ହେଯାନ୍ତିର  
ନାମ୍ ଏକ ରାଜା ଥାକେନ । ଯନ୍ତ୍ରିଆ ପରାମର୍ଶ କରିଯା ମେଇ  
ରାଜାର ପୁଣ୍ୟ ରତ୍ନାନ୍ଦକେ ଘୂରାତ୍ କରିଲେନ । ରତ୍ନାନ୍ଦ  
ଯୌବନାଜ ପାଇଯା ନିତାର ଉପାର୍କ୍ଷିତ ବିନେତେ ଗବିରତ୍ତ ହଇଯା  
ଏବଂ ଯୌବନମଦେତେ ଶତ ହଇଯା ଅତ୍ୟାର ଲୋକେର ପୁତ୍ର ଅନ୍ୟାନ୍ୟ  
କରିତେ ପ୍ରବୃତ୍ତ ହଇଲ । ପୁଠିନେରା କହିଯାଇଛନ ଯେ ବିଶିଷ୍ଟ  
ଲୋକେର ଆକାଶଦୃଶ ପୁଣ୍ୟତେ ବଂଶ ରୁକ୍ଷା ହ୍ୟ ଏବଂ ଅତି  
ଶିର୍ଯ୍ୟକ ପୁଣ୍ୟଦୀରା ବଂଶ ଉତ୍ସୁଳ ହ୍ୟ ଆର ଅର୍ଦ୍ଦମ ପୁଣ୍ୟଦୀରା  
ବଂଶ ଶୀଘ୍ର ଫୀନ ହ୍ୟ । ଅପର କୋନ ଅର୍ଦ୍ଦମ ପୁରସ କୁଳ ବିନ ଓ  
ପାରନପୁଣ୍ୟ ହଇଯା ଓ ଉତ୍ସୁଳ ବିଦାନାଂତ କରିଯା ଗବିରତ୍ତ  
ନା ହ୍ୟ । ଯନି ବିନ ଓ ଯୌବନ ଏବଂ ବିଦ୍ୟା ଏହି ମରଳ ଲୋତ  
ଲୋରା ଅହକାର୍ଯ୍ୟକୁ ନା ହନ ତିନି ମର ପୁରସ ଆର ପଣ୍ଡିତ

मात्रानीर यद्यो तिनि पूजनीय हन । अपर ये पूज्य  
 पूज्य हইয়া অহকার জয় কৃতিতে পারেন । এবং যৌবন  
 অম্ভয়ে কন্দর্শকে পরাজিত কৃতিতে পারেন মেই সাহুলোক  
 তাহাকে জয় কৃতিতে না পারেন অর্থাৎ তিনি সকলকে  
 জয় কৃতিতে পূজ্যেন । অপর যে শ্রী কুলবীর্য অতিক্ষয়ন  
 করে আর যে মনুষ্য বিম্বণ ওলঁশন করে মেই দুয়ের  
 প্রদীপে কোন পার না জন্মে যে হেতুক তাহার স্বচ্ছা  
 মাঝী হইয়া কুণ্পগামী হয় কেহ তাহার দিগন্তে নিষেধ  
 কৃতিতে পারে না যেত ওলঁশন ইন্দু স্বতন্ত্র গীমন করে  
 তাহাকে কেহ বাইন কৃতিতে পারে না তাহার ন্যায় । অন  
 তর মেই রত্নাদি পিতৃবিয়োগের পর স্বয়ং রাজা হইয়া  
 শৈনিরদিগের বিনহরন এবং পর শ্রীহরন আর অপরাধি  
 রহিত পুজার্দি পঁর পুনরাবৃত্ত কৃতিতে লাগিল । তখন  
 মেঘানকার সকল লোক বিবেচনা কৃতিলেন যে এই  
 রত্নাদি ব্যন্তি রাজা নহে এ নিতাণ্ড দস্য আর প্রয়োজ  
 শুরুজ্ঞ ইন্দু স্বানভূত হইয়া দোরোক্ত করে মেই শর  
 যৌবনসদে যত এবং বিম্বণুত এই রাজা পুজারদে  
 প্রতি দোরাত্ম কৃতিতেছে পদি সকল লোক এবং পরামৰ্শ  
 হইয়া এই রাজার অপরাধের উপরূপ পুজীকার করেন

तारे सकलेर म्हायिदुःहक्क पाप हईवे यदि कोन  
प्रुडीकार ना करेन तरे सकलेर विनाश हईवे अउव्वर  
मूलिगीनवारा नवपतिके विमर्शदेश करान कर्तव्य । परे  
मठिबेगा ओ आरु पुरीन लोकेगा मूलिगीके आळान  
करिलेन । पळ्ठां मूलिगीन एकत्र हईगा राजार निरुट्टे  
चिया कुहिलेन हे यांत्रज तुमि विर्मनफ्यु कर विर्माइ  
राजार कारन हईयाचेन वर्ष्यर तूनता पुण्यकु अन्  
सकले केवल मायान्य घनूष्य हईयाचे तुमि पुरव जन्मा  
अदिक विर्मनफ्यु करियाच ताहार छले नवपति हईयाचे  
पुनश्च विर्मानुकान कर ताहाते इहाहईतेओ उम्म पा.  
पाईवा । परे राजा जिजासा कुहिलेन हे मूलिगीन  
विर्म कि पुकार । मूलिगीन उत्तर कुहिलेन ये परदुय  
हरन ३ परद्वाराडिगीमन एवं पर हिंसा एই सकलेर  
निवृतिकर्त्तु आर दया एवं दोन ३ पुजापालन ओ यज्ञ  
एवं दुत एই समूदायेर पुरुतिकर्त्तु वेवोदित ये  
विर्म ताहार नाम विर्म । राजास्त्रद नवपति पुनश्च जिजासा  
कुहिलेन ये सेई विमोते कि हय । मूलिगीन कुहिलेन  
ये अर्थ काय मोक्ष एই त्रिवर्म मिस्त्र हय । राजा कहि  
लेन इहार पुरान कि । शधिरा उत्तर कुहिलेन और्खरेय

पुनीत वेद मक्ल ईहार पुरान आज्ञेन । राजा बलि तन  
 औप्सर नाइ तीहार पुनीत वेद कि पदि औप्सर पालितेन  
 तब आयार दृश्या अपरा अनुभूत इहितेन तिनि आयार  
 किस्मा अन् लोकेव दृश्य इन ना एवं अनुभूत इन ना  
 अतएव औप्सर नाइ तोमन् गुनि अडाणु माना केन मिथ्या  
 दृश्या आयारके भुलाइते यदि पूर्णच एই पुरावर कह  
 तब ईहार उपर्युक्त दण पाहिरा । मूलिगन एই वथा  
 शुनिया द्रासेत वाहिये आमिया परम्पर कहित लागि  
 लेन ये एই राजा नान्क के आयारदिगेर कथा गुहन  
 करिवेन। तब कि पुरावर ईहार मन्द इहिवे ईहा कहिया  
 तीहार। अपन॑२ माने गेलेन। अनन्तर मन्दिरा योग्यार  
 दिगेर महित पर्यायर्थ करिलेन ये एই रत्नान्दि अतिदृष्ट  
 पुरु ईहाके कोनह ओपायेते राजा हिते दूर करिते  
 हिते। एই कथोपर्यन्तेर पर ऐ मक्ल लोक एवं  
 परामन् ईहार राजाके अपदम् करिया तीहार कविष्ठ  
 भुतिके राजा करिलेन। शास्त्रे एই कथ लिखन आदि  
 ये राजार मन्दी विरक्त हय मेहि राजार राजा नक्ष हय  
 एवं ये नरपतिर पुजारा विरक्त हय तीहार आयुष्म हय  
 हय। मेहि काले रत्नान्दि चिन्ता करिलेन ये आमा

ତୁ ଆମାର ରାଜ୍ୟ ଲଇଲେନ ଇହାର ପରେ ଆମାର ପୁଅ  
ଲଇବେନ ଅତ୍ସବେ ଏଥାନିହାଇତେ ପଳାପନ କରି । ଇହା ମିର  
କରିଯାଇଲେନ କୋଣ ଗୁମ୍ଭେର ମଦ୍ୟ ନା ପାଇଯା ଏହି ତର୍କେ  
ବନେର ମଦ୍ୟ ବାମ କରିଲେତ । ପଞ୍ଚାଙ୍ଗ ରତ୍ନାନ୍ଦ ପୁତ୍ରଦିନ  
ତପ୍ରଶିରଦିଗେର ଆନ୍ତିତ ଫଳ ପୂର୍ଣ୍ଣ ଲଇଯା ଭକ୍ତନ କରିତେ  
ଲାଗିଲେନ । ତପ୍ରଶିରା ରାଜୀର ଦୌରାତ୍ୟ ବିରତ ହଇଯା  
ରାଜୀକେ କହିଲେନ ଯେ ହେତୁପତି ତୋଯାର ଭୁତା ତୋଯାକେ  
ନଷ୍ଟ କରିତେ ଏଥାନେ ଆସିତେଛେ । ରାଜୀ ଏହି କଷ୍ଟ  
ଶୁଣିଯା ଅତି ଭୀତ ହଇଯା ଚିନ୍ତା କରିଲେନ ଯେ ଭୁତାର ଅମେର  
ମହାୟ ଆଜେ ଆମାର ଅନ୍ୟ ମହାୟ ନାହିଁ କେବଳ ଏହି ବେଶ୍ୟା  
ମହାୟ ଆଜେ ଇହାତେ କି ପୁକାରେ ଆନନ୍ଦାର ପୁଅନ ରଙ୍ଗା କରିବ  
ଅତ୍ସବେ ଏଥାନିହାଇତେ ଦୂରେ ଯାଇ ଇହା ମିର କରିଯା ଏହି ବେଶ୍ୟାର  
ମହିତ ବନାନ୍ତରେ ପଳାପନ କରିଲ । ଅନନ୍ତର ଓଡ଼ିୟେ ଏହି  
ବନ୍ଦିଲ ତାହା ଜୀବ ହଇଲେ ଶୀତକାଳ ଓପରିତ ଉଠେଲ ଉଧନ  
ଏହୁ ଜନେର ଶୀତକାଳକୁଠା କେବଳ ଏହି କମ୍ବଳ ପାଇଲ ଦୁଇ  
ଜନ ଶିଲିତ ହଇଯା ଏହି କମ୍ବଳ ଆମନ ଓ ଶରୀରାବରନ କରେନ ।  
ଯଥନ ରାଜୀ ମେଇ କମ୍ବଳ ଲଇଯା ମୃଣିଯା କରିତେ ପାନ  
ଉଧନ ବେଶ୍ୟା ଶୀତେ ଅତି ଝାତରୀ ହୁଏ । ଏହି ଦିନ ଗାନିକା

शीते अत्यनु वाडवा हइया राजा के कहिते नामिनि रे  
क्षमादेश तुই राजा हइया केबल आनन्दार्थ आनन्दोषेते  
राजागृह इहैयाक्षिम उपासि मुख्या करिया आमाके  
जनमध्ये आनिया नितानु दृष्टिप्रिम आगि आर  
दृष्टि महा करिते पारिना आमाके ताँग कर हा उत्तर  
प्रभु बातिरेके याहार शैया हइतना एवं घोटक याति  
रेके याहार प्रयत्नागमन हइत ना आर कन्तुवांदि उत्तर  
आमाग्नि बातिरेके याहार तामूल चबरन हइत ना ओ  
याहार समीपे सर्वदा ठामर बाजन हइत एहे कथ मुख्य  
मुख्य ये तुमि एकत बाबिल नाम जोर हिंसा करिया  
उदर पूरन करितेछ अतएव तोमाके विक्। रत्नादि  
बेश्यार तिरकार बालु शुनिया कहिलेन हे प्रिये विषाद  
करिओ ना। कोन समये पूरषेर विपद उपस्थिता हय एवं  
समय विशेष मेहि विपदेर पूतीकार्त्ति हय इहाते उद्दृ  
क्तुवा नाह आर आगि प्रतिज्ञा करितेछि ये एहे बात्रित  
द्वितीय एक कम्बल आनिया अवश्य तोमाके दिव इह  
अनन्ति हइदेना। सम्भुति तुमि अग्निमवा करिया शीउ  
निवारन कर आगि द्वितीय कम्बलार्पि याहितेछि। राजा  
बेश्यार निकटे ए प्रतिज्ञा करिया निज कम्बलेते आनन्द।

ପରେ ଚାକିଆ ଏକ ନଗରେ ଯଦୀ ଗୋଲେନ ପରେ ଏକ ବୁଝନ  
 ଗେର ଗୁହେ ମିଦିଯା ମେଇ ମିଦିର ଯୁଧୀ ଆପନାର କମ୍ବଳ  
 ଯାନ୍ତିଆ ଗୁହେ ଯଦୀ ପୁରୁଷ କରିଲେନ ଏବଂ ଅନୁମଞ୍ଜାନ  
 କରିଯା ବୁଝନେ ଶରୀରିଛିତେ କମ୍ବଳ ଆକର୍ଷଣ କରିତେ ଏହି  
 ବୁଝନେ ନିଦ୍ରାତଥି ହଇଲ । ତଥନ ବୁଝନ ଓଟ୍ଟମୁଖରେ  
 ଶୁଭିର୍ବାସିରଦିଣକେ କହିତେ ବାଗିଲେନ ଯେ ତୋମର ଶୀଘ୍ର  
 ଏଥାବେ ଆମିଆ ଏହି ଚୋରକେ ମାର । ଚୋର ମକୁଲ ଲୋକଙ୍କେ  
 ଜାଗୁଥ ଆମିଆ ଅତିକ୍ରମେତେ ଗୁହେ ବାହିରେ ଆମିଆ  
 ତୁରାପୁରୁଷ ଆପନାର କମ୍ବଳ ତ୍ୟାଗ କରିଯା ଶୀଘ୍ର ପଲାଶଙ୍କ  
 କରିଲ । ପଞ୍ଚାଂ ଚୋର ନରପତି ନଗରେ ବାହିରେ ଆମିଆ  
 ଶୀତେ କାତର ହଇଯା ବିବେଚନା କରିଲେନ ଯେ ଆମାର ଏକ  
 କମ୍ବଳ ଛିଲ ତାହାଓ ଗେଲ ପରେ ଶିର ଚିତ୍ତରେ ଚିଢା କରିତେ  
 ବାଗିଲେନ ଯେ କାହାର ଇଛା ଓ ଘଡ଼ ସତିରକେ କାର୍ଯ୍ୟ ମିଳ  
 ନା ଏବଂ ତାହାର ଇଛା ଓ ଘଡ଼ରେ କାର୍ଯ୍ୟ ମିଳ ହୁଏ  
 କିନ୍ତୁ କାହାର ଇଛାତେ ଆମାର କମ୍ବଳ ଗେଲ ଆମାର ଏଥନ  
 ଇଛା ଛିଲ ନା ଯେ ଆମାର କମ୍ବଳ ପାଇଁ ବରଂ ଆମାର ଇଛା  
 ଓ ଘଡ଼ ଛିଲ ଯେ ବିଜ୍ଞାନ କମ୍ବଳ ଯିଲେ ତାହା ନା ହଇଯା ତାହାର  
 ବିପରୀତ ହଇଲ ହା ହଇବା କାହାର ଇଛାତେ ହଇଲ ଏବଂ ତିନି  
 କେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ବୁଝି ସର୍ବଦିନା କେହ ଆଜନ ତାହାର ଇଛା

तेहे महल मळव इय तिनिहे मंमारेव सृष्टि विश्व  
 पुलपूरकर्ता एवं परमार्थविद् परमेश्वर हा येत ये परम  
 पूरुष ताहाके आणि गोहपूरुष आपापि चिनिते पांच  
 लाभ ना आव ताता दोषे ओ अहंकारे एवं अजानताते  
 खाच मिळ वाण्य ना शुनिया ईश्वरोक्ताव निर्माणकर्त्ताके  
 जानिते पारिलाभ ना हा एथन किंवित अथवा विषाद  
 कर्त्तव्य नहे यत्तु अजानतापूरुष अनेक अन्या पांच रूप  
 करे विनु पथन ताहार विर्माते पूर्वते इय मेहे समग्र  
 ताहार शुद्धताव अपर लोक यथन पांच प्रतांगी करिया  
 विश्व किंवाते पूर्वते इय उद्दरविद्ये काळ मेहे काळ ताहार  
 अग भोगीर विश्व इय अंत्र येत ओवरी रोगिंद्रदेव  
 मस्तिष्ठान नष्ट करेत अतव अप्य पूर्वति आणि उपासा  
 करिते पूर्वते इलाम । इहा निर्द्वारित करियां मेहे  
 राजा लक्ष्मिका बोधार तिकटे आमिया कहिलेत ये हे  
 देशा आणि तोयाके तांगी करिलाभ तुम्ह अतिनिष्ठित  
 दाने पांच देशांते कृपा शुनिया तगीद्रव शब्दी गेल ।  
 तथन राजा छिना करिते वाचिलेन ये काळ चियांजे  
 ताहा नूनवर्दा आमिरेना एवं ये काळ मस्ति पाइतेजे

ताहा आर मिलिबे ना अउपव आर वृप्ति कालयांनम्  
हुत्या नहे आयि एই अवधि महादेवेर उपस्था करिया  
ताहे काल यांनत करिव। राजा एই प्रतिज्ञा पूर्वक  
महादेवेर आश्रादिना करिया महात्मासी हइलेन। मेरे  
मय्य मूलिगोन विवेचना करिलेन ये मनुष्य जातिमात्रेते  
ठोऱ अथवा विमर्शक हय एमत नहे ये पुकार किया करे  
मेरे कृप खांड इय देख रुद्धादिद पुर्यमे राजा हइया  
मर्या दमुवृत्ति करिया ओ पूर्व जन्मात्र कर्म फलेते शेषे  
उपस्थी हइया महापूरुष हइलेन। इति अनुग्रहिकृपा।  
मात्रिकादि अनुग्रहि पर्यह विमर्शकरूपा समाप्ता। विमर्श  
क्रेदिगोर लक्ष्मन मरुल कहिलाय ताहारचिंगीर पुत्रादा  
हरन ये बोक्ष्वरदिगोर लक्ष्मन ताहा कहिलाय ना इहार  
कारन एই ये बोक्ष्वरा नितातु अविम अउपव पुरुषेर  
देवलक्ष्मनाकाळ नय किन्तु पूर्व उत्तम अनहीन ये ठोरांसि  
परं वहकादि पुरुष मरुल ताहारा पूरुष लक्ष्मनांक जिल  
अउपव पुत्रादा हरनेर मर्या ताहारदेर लक्ष्मन कहियाचि  
बोक्ष्वरा ठोरांसि हिते अविम एই प्रयुक्त पुरुषेरदेर  
मर्या गीनित नहे अउपव ताहारदेर लक्ष्मन कहिलाय न।।

अप्य दीनिकरुपा ।—

शहेत्तु प्रवृत्त शूद्र ओ वहाँ प्रवृत्त मानवीन एहे ठारि पुकार  
दिनो लोक यथाक्रमे इहाँ दिगोत लक्षण रुहिव प्रयो  
महेत्तुरुपा पुसन्न इहेत्तेजे ।—

अप्य शहेत्तुरुपा ।—

ये लोक न्यायेते अर्थीनास्त्रुत करिया सेहे अर्थ प्राप्त  
ओ भोगी रुहेत एवं तिनि यदि पुना ओ यशोर आशुय इन  
उबे महल लोक ताहाके महेत्तु रुहेत ताहार । औं  
इरन एहे ।—

पांचुप्रत्यन नगरे गोड़ राजार मन्त्री महाराजाद्व  
कामे एक फलिय छिलेत । तिनि स्वायि उक्तिपरायां हीया  
आत्मन् परिचित नायक एहे उपाधि पाइलेत परम्परा  
महल लोकेर निकटे मताराजकपे धारत इहेलेत ।  
प्रतितेरा रुहियांजेत ये दीर्घ प्रवृत्त अप्य ओ राम यार  
मोक्ष एहे ठारि पुकार पुरुषार्प किन्तु पुन्हु उक्तिते ए ठारि  
पुकार पुरुषार्प लाभ इय । सेहे साभाविक वीर्मिक मन्त्री  
दिम्योपायेते दिनोनास्त्रुत करिया ताहार शय प्रवृत्त मिति

ও শুন্দি এই বিবেচনা পূর্বক কার্য করিয়া পুঁতুর দীন সঞ্চয় করিলেন। অন্তর যতো বিবেচনা করিলেন যে অপৰ্যাপ্ত পুরোহিত কিন্তু আশি শুমান এই অভিযান যাহার হয় তাহার শুরু দীর্ঘকাল থাকে না যে হেতুকুল মস্তী ঢালা আর যে পুরুষেরা অধিকাদিক বিনাকাঙ্ক্ষা এবং সবর্ণ কুশল ও বিনোপাঞ্জনে পুরুষ আছেন আর দীনবিষয়ে নিজ পরিজনেরদিগুকে বিশ্বাস করেন না ও দীনব্যয় করিতে পারেন না তাহারা কেবল কার্যের ভার বহন করেন অপর যে লোক মঙ্গিত দীনতে আপনাকে ঢরি তার্থ জান করেন তাহার অর্থের দুন্দি ইয় না অন্য পুরুষের যে পুরুষের বলবান সহায় বশীভূত থাকে তাহার বিনোপাঞ্জনের যোগ্যতা করাগুরুত্বিতী হয় কিন্তু বুদ্ধিমান লোকেরা দীনকে দীনজ্ঞান করেন না বিনোপাঞ্জনের যোগ্য তাকে দীনজ্ঞান করেন তাহার কারণ এই যে দীন নষ্ট হয় অর্থোপাঞ্জনের যোগ্যতা হঠাৎ নষ্ট হয় না সম্মতি আমার অনেক দীন আছে এ পুরুষ দীন চিহ্নও কর্তব্য নহে আর রাজা এক শ্রেণির পরিমিত দুর্ব ভোজন করেন চৌরও মেই এক শ্রেণির দুর্ব করে অতএব আহারার্থে রাজাৰ অধিক দীনতে কি পুয়োজন এবং চৌরের দীন

इनतातेइ वा कि हानि उन्नियिते क्रेवर्ल आहारार्द्दे  
विनमक्षय कुरुवा नहे महित विनेव पे पुरीन एल ताहा  
लात कूरि एहे विवेचनाते अर्धव्यय कृतिया माला चन्दन  
अ वनिता। एवं तामूलादिशारा सुधानूडव कृतिया पूर्णा  
भिलाष इलेन ओ डुला पुच्छति महादान कृतिया कौर्ति  
मार्गेन कृतिलेन ओ पुच्छव विन वायेते ओवान लोक मक्क  
लक्के मक्कफ्ट कृतिया आननार्द ओनक्कतापुकाश कृतिलेन एहे  
कृपें योवन काल यानन कृतिलेन। ए यज्ञी योवन  
मययेव परविषये विरुद्ध इत्या द्रुत ओपरामादि काय  
क्लेशमाद्या पे दीर्घ ताहाओ मक्षय कृतिलेन। अनक्कर  
मक्कल दर्शक ये वाक्करा ताहा ओप्रस्थित इलेय यज्ञी कर्मा  
श्रवीरेव मोन्दर्यनाश ओ मार्याहानि आर गृहेर विन  
क्षय एहे मक्कल देविया चिन्ता कृतिते लागिलेन पे आग्नि  
पंख्तुपाइले आग्नार मक्कल विन तक्क हईवे एवं मक्कल  
विन लुक्त हईवे ओ पुच्छतक्क याइवे आर एहे पे देहेव  
शी ईहाओ धाक्किवे ना उवे मक्कुत दीर्घार्द्दे केन मक्कल  
मक्कति लित्तुन ना कूरि आर यन्दूया मक्कल विषय तागी  
कृतिते पारिलेइ वामनारहित इय ईहा मिर कृतिया  
हरिळ्लद्दुराजार मत आननार्द मर्वरम्ब दुःखनेदिगेन्ने

मान करिलेन एवं राजा विक्रमादित्येर नाम पृच्छुति इहेरा अनश्वन्तवृत्त करिया पूजागतीर्थे देहतांग रुक्षिलेन।  
 एवं उक्षणां सर्वे गमन करिया देवतु पाइलेन।  
 मात्रुलोकेरा महाराजदेवेर कीर्ति शुनिया एवं मरणेर वापां देयिया विवेचना करिलेन ये एই मंडी परार्द्ध मंडप्यक दिन उपाञ्जन ओ बित्रन करिया यातक्रेदिगीर शनोरथ पूर्ण करियाजेन एवं प्रोबन मरये कुदर्पेर सेवा करियाजेन मन्त्रुति उत्तम तीर्थे पूजानत्याग करिया मृक्षु हइलेन। अतएव एই मरुल कार्यहइते अदिक पूर्ख घार्थ कि आज्ञे। अनेक दिनदान लोक दूरहइते आगत अपठ निजस्वारम्भ यातक्रेदिगीके क्रिक्षि॒१ दान करेन।  
 मंडी महाराजदेव दिना यात्राते यातक्रेदेव गृहेते पूर्त दिन प्रेरन करियाजेन अतएव पूर्पिवीर मरदी महाराजदेवेर तुला दाता ओ मरुल पूरुषार्थयुक्त अना केह नाई। इति महेषुकृपा मरणाता।

अप मृक्षुपा।

ये लोक लभ दिनेर पूजाशाते ममुद्रय लव दिन व्यय करे एवं दीर्घ आरु अर्थ ओ काम एই ममुद्राम्भेते अनभिज

हय जानवान् लोकेन्ना ताहाके पूछ कहेन। ताहार  
उदाहरन एहि ।—

अयोध्या नगरैते भूरिवसु नामे बनिकेहु पूचुरविन नामा  
एक पुण्ड्र छिल मे नितृ वियोगीर पर नितार मक्षित द्विन  
पाइया चूचिन लोकेन दिग्निके जिज्ञासा करिल ये आमार  
निता कि ओपायेते एत दिन मक्ष्य करियाउलेन। बृह्म  
लोकेना कहिलेन ये तोमार निता केवल बानिज्यैते  
अर्थमक्ष्य करियाउने शास्त्रेर एहि यत लिखन आजे ये  
बृह्मान्देशे जान जावो एवं राज मेराते शर्यादा लाभ  
हय ओपानेते पुन्य आर घण्टालाभ हय एवं बानिज्यैते  
दीनमक्ष्य हय। पूचुरविन ताहा शुनिया पुनर्नष्ट जिज्ञासा  
करिल ये बानिज्य कि पुकार। बृह्मरा ओउर करिलेन  
शुन गोड देशे कीत वसु ओङ्कर देशे विक्ष्य करिया एवं  
ओङ्करे कीत वसु गोडे विक्ष्य करिवे अर्थात् लिखन ये  
माने ये दुव्य सूलभ हय ताहा कय करा एवं ये समये  
ওये माने ये दुव्य माहार्य हय मेहि समय विशेषे किम्बा  
मेहि मान विशेषे ताहा विक्ष्य करा एहि बानिज्य। पति  
तेरा कहियाउने ये एक देशहैते अन्य देशे दुर्बोर  
आनन्दन एवं एक समये कीत वसुर कालात्मक विक्ष्य

କରନ ଇହାର ନାମ ବାନିଜ୍ୟ ଇହାତେ ହୟ ଯେ ଦୁରୋହ ମୂଳ  
 ବିଶେଷ ତନ୍ଦୁରା ବନିକେରା ମୂଳ ବିନିହିତେ ଅଧିକ ଲାଭ କରେନ  
 ଆପର ଯେ ଶ୍ରୀ ପତିବୁତା ନା ହୟ ଏବଂ ଯେ ପୁରସ ବ୍ୟବମାୟୀ  
 ନ ହୟ ମେଇ ଦୁଇ ଜଳ ମଧ୍ୟ ବିଶେଷେ ଅତିକ୍ଳେଶ୍ ଭୋଗୀ  
 କରେ । ଅତେବ ତୁମିଓ ବ୍ୟବମାୟ କରିତେ ଉଦ୍‌ଦୋଗୀ ହୁ  
 କୋଟିଶର ଯେ ପୁରସ ତ୍ରିନିଃ ବ୍ୟବମାୟ ନା କରିଲେ ନିର୍ଭିନ୍ନ  
 ହନ । ଅନୁଭୂତ ମେଇ ବନିକଳ୍ପୁଣ୍ୟ ବିବେଚନା କରିଲ ଯେ  
 ଆମାର କୋଟି ମଂଧ୍ୟର ବିନ ଆଛେ ଇହାର ଲକ୍ଷ ତଙ୍କାତେ  
 ଶ୍ରୀତ ବନ୍ଦ ଏକ ଦେଶରେ ଅନା ଦେଶେ ଲଇଗ୍ନ ବିକ୍ରି କରିଲେ  
 ତାହାର ଚତୁର୍ଥ ବିନ ପାଇଁ ଅତେବ ମରବଦୀ ଏହି ପୁରୀର  
 କରିଲେ ଅମଂଧ୍ୟେ ବିନ ହିବେ ତାହାତେ କୋନ ଚିତ୍ରା ପାଇଁ  
 ବେନା ଦର୍ଶନ ଲକ୍ଷ ଟାଙ୍କାର ବ୍ୟବମାୟେତେ ପୁନବର୍ବାର କୋଟି ମୁଦ୍ରା  
 ଅବଶ୍ୟ ସଫ୍ରେ କରିତେ ପାଇବ ମଞ୍ଚୁତି ଦର୍ଶନ ଲକ୍ଷ ମୁଦ୍ରା ରାଖି  
 ଯାଏ ଅବଳିକ୍ଷି ବିନବ୍ୟେ କରିଯା ଯୌବନୋଚିତ ମୁଖଭୋଗ  
 କରି ଯେହେତୁକ ଅର୍ଥ ଆଇମେ ଏବଂ ଯାଏ ଆର ପୁନଃ ଲଭା  
 ଏହ କିନ୍ତୁ ବାଲ କାଳାଦି ଯେ ବୟକ୍ତମ ତାହା ଅତୀତ ହିଲେ  
 ପୁନବର୍ବାର ଆଗିମନ କରେ ନା । ବନିକଳ୍ପୁଣ୍ୟ ମହାମି  
 ଦ୍ୟାମୋରା ଏହି ରୂପ ଶୁନିଯା ତାହାକେ ପୁଣ୍ୟମା କରିତେଲାଗି  
 ଜେତ ଯେ ମାତ୍ର ବନିକଳ୍ପୁଣ୍ୟ ମାତ୍ର ତୋଯାର ନିତା କୃତିନ ଛିଲେନ

तिनि केवल अर्थीनास्त्रुत ब्रह्माचेत किछु तोग ब्रह्मिते  
 भावेन ताइ किन्तु तुम्हि विनश्वायो हइया अनाशामे सम्म  
 दाय तोग ब्रह्मिते पारिवा । अनक्कर मेहि युठ आनन्दारु  
 महासिरदिग्गेरु रुधाते ओमाहयुठ हइया नियम्भर द्वन  
 द्वय ब्रह्मिते लागिल । याहार विन थाके मोयंद्र अप  
 द्वय रुहे उबे मेहि अष्टार्प द्वयकप द्वमने ए विनिरु  
 विन द्वय हय किन्तु मेहि विनग्नीहक्केरदिग्गेरु एवं अन्य  
 लोक्केरदिग्गेरु किछु हाति हय ना अन्य यावट सामिरु  
 वित्तव थाके उावट मनुष्येना तांहार विनाशादत रुहे ३  
 सामिरुके सुव रुहे लक्ष्मी पुत्रु निर्विन हइले मनुष्येना  
 हेवल तांहार तागी ३ निना रुहे । परे मेहि युठ  
 तुहरु काले हि हइवे इहा विवेचना ता ब्रह्मासम्म  
 द्वरेव यद्यु माला । एवं ठदन ओ युरजी आर तामूल ३  
 आरु युग्मरु युग्मग्नीरु निमित्ते सर्वर्म्म ओहिम ब्रह्मिल  
 एवं पुनर्व दण्डलक्ष्म युद्धा राघिवार ये परःमर्ग करिया  
 छिल ताहा ना दाखिया एक लक्ष्म युद्धामात्र बापिल पक्षी  
 किदिँ ब्राह्मिलेते मेहि एक लक्ष्म टोका अद्वेक द्वय किल  
 येयत पुवाहरहित ब्रूपेर जल लोककर्तृक नीप्प्रान  
 हइया रुप पाय मेहि मत ओपाय रहितज्ञयुठ गीद्वेर

मंकुत दिन अन्न यायेते ३ कीर्ति हय । शरे मेइ वधिक  
अन्न अन्न यायेते किंश्चित् काले निर्दिन हइया अवसम  
हैल । निषित्तेरा रुहियाज्ञन पे कोटीश्चर नुखृ३ कीर्ति  
हैन हैले बुद्धि ३ विवेचनाते रुहित हय एवं पूर्वाभास  
क्रमेते यथा वामना रुहिया सर्व दिन यथा कराते अन्न  
काले परिदृ हय । इति शूक्रपा ममाण्डा ।—

अथ वच्छाशक्ति ।—

पे लुक्त पुरुष दिन लाभ रुहिया उक्ते हय ना एवं यथा  
लाभेह्ना रुहिया सर्वदा पृथुर दिनेते दीर्घ पृथ्याना कर्ते  
नीतिज लोकेह्ना ताहाके वहाँ रुहेन । ताहार उपा  
हरन एই ।—

विजयनगरेते कृतिकुल नामे एक यालाकार छिल  
मे अति सुन्दर याला प्रसुत रुहित एवं यालागाहक  
नर्गिस लोक उपामना रुहिया आनेक रत लाभ रुहिया  
उत्ताहा अलु जाह रुहिया पृथुर दिन लाभेह्नाते राजा  
मेवारेषु रुहिल । अनुकूर यालाकार यालादानेन  
क्षेत्रेलेते राजाके मनुष्ट रुहिया नर्पतिर अनुभुहेते

शालांरु पूँझमंथक मुद्दा नाड करिते लागिल . तिथु  
 अपालि शालाकारेय मुत्तापार नियृति हड्डेन ना । आन  
 बान लोकेना कहियाजेन घेलोक पराक्र परिमते रीता  
 हाँ । करिया इत्सुतो रीबल करिया आपनाके उद्दा  
 निर्दन जान करे मेहे बहु ॥ पूरवेद कोन शान मुझ  
 जान्ने ना । अनस्त्र मेहे यालिक प्रत्यापाते ओउरोउ  
 बाकुल हइया एहे ठिला करिल घे अलबु विनेते ओदासा  
 रुहा एवं लबु विभवेते आपनारु मन्त्रोष ओ प्रोष्ण करा  
 आर अर्थेर परित्य देओया एवं विन लोगी करा एहे मशु  
 दार कापा करनेते अर्थेर बृक्षि हय ना वरुं मष्टितार्थेर  
 लोभ हय एहे चरायर्श करिया शालाकार पिञ्चलीर बाबमाय  
 एवं कृषिर्मा आर अन्न बानिज्य ओ पञ्चालनादि  
 विनोनाकुनेय घे ॥ ओपाय आजे मेहे सरुल कार्याते  
 आपनार जर्थ सरुल निषुक्र करिल एवं आपनि ऐसरुल  
 बाबमायेते निषुक्र हइया ओ पूर्वमत राजमेष्ट करिते  
 लागिल एवं जात्रु तिन्म सरुल लोकेन्द्रियाम करिया  
 द्यम् ॥ परिशुम करिया सरुल बापार कराते आजाउ  
 अर्थक हड्डेन आर यथत बानिज्य बाबमाये थाके ऊपन  
 कृषिर्मा हय नाये मशु दृषिर्मर्याते थाके ॥ करिल

ପିତ୍ରଲାମୁହ ହୟ ନା ପାବନ ନିଶ୍ଚନ୍ତି ମୁଗୁହ କୁରେ ତାବନ  
ଲାଗିଲ ଏବଂ ଆନନ୍ଦି ସବରୀ ପରିଶୁଷ୍ମ କରିଯା ଅତି ଦୂରବଳ  
ହେବ । ଅନନ୍ତର ରାଜା ମାଲାକାରେର କୋଳ ଅପରାହ୍ନେ  
ତାହାର ସବର୍ମ୍ବ ହରଣ କରିଲେନ ନିତି ଶାଙ୍କେ କୁପିତ ଆଜେ  
ଯେ ଦୋଷେରୀ ଯଦି ନୃତ୍ୟକୁ ଜନ୍ମାବସି ଯତ୍ତୁ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ମେବା  
କୁରେ ତଥାପି ମେହି ରାଜା ମେବକେବଦେର ଯଥକିଞ୍ଚିତ ଅନ୍ତରୀ  
ରାଖି ଏ ମେବକେବଦେର ପୁତ୍ର ଅତ୍ୟନ୍ତ କୁପିତ ହନ ଏବଂ ମେହି  
କୋଣୋତ ଯଦି ମେବକେବଦେର ପୁନଃ ନା କରେନ ତଥାପି  
ଦୟାରୀ ନାହିଁ ତାହାରଦେର ମବର୍ମ୍ବ ଗୁହନ କରେନ । ଅନନ୍ତର  
ମାଲାକାର ନିରିନ ହେଯା ଅବିକୁ କୁରୀ ଏବଂ ଦୂର୍ଭ ବଜୁର  
ଲାଭେଟ୍ରୀ ଓ ଯୁଧ୍ୟରତା ଆର କାଳୁକ୍ତି ଓ ତାବନ ପୁମଦେ ଅନ୍ତରୀ  
ଭିଜତା ଦରିଦ୍ରେର ଯେ ଏହି ପାଠ ଦୋଷ ତଥୁଫା ହେଲ ଏବଂ  
ଦରିଦ୍ର ହେଯା ପରିଜନ ପୋଷୁଣେତେ ଅମର୍ଯ୍ୟ ହେଯାର ପାଠୀ  
ଓପାଞ୍ଚନ ହେଯା କରିତେ ଲାଗିଲ । ପାଠୀ ମାଲାକାର ଏକ  
ଅନିତେ କତକ ହୁନି ମାଲା ଲାଇଯା ଦିଜ ନାହିଁ ରହିତେ ଜତା  
ଦୁଃଖ ଯାଇତେଜେ ମେହି ମମୟ ଦୁଇ ପୁଷ୍ପକିନୀର ମଧ୍ୟ ସାନେ  
ଆତ ବୃହନ୍ତ ମାତ ସିନଭାଣ ଯାଇତେଜେ ଇହା ଦେଖିଲ ଏବଂ  
ଦେଖିଯା ବିବେଚନ କରିଲ ଯେ ଏହି ଅଚେତନ ବନ୍ଦ

किं तुलारे एक सरोबरह इतेऽन् सरोबरे थाह तेजे  
 एव रज्जु आम्भर्या किंतु आम्भि विरेचना करि ये एह महल  
 निषिताओ हइते पारे मेहे निरि गतिते इहारा गमन  
 करितेजे आम्भि शीघ्र एह महल जाओ पूजा करि। इह। मिल  
 करिया ऐ महल माला दिया प्रतोक्त जाओ पूजा करिया  
 ताना पुकार सुव करिल। ताहारपर पूर्ण भाओ हइते  
 एह बाक्ष निर्गत हइल ये हे द्विदु ये भाओ महलेर  
 पञ्चां आसितेजे ताहाह इते तुमि किछु दिन लहैवा।  
 ताहारपर आर नीच भाओ मेहे पुकार कहिल शेषे  
 पञ्चम भाओ आपन मूर्ख आवरन धुलिया। एवं मूर्ख  
 पुकार करिया कहिल हे मालाकार आम्भरा महल तुक्त  
 हइया तोयाके सातु अङ्गुलि मर्व दितेकि तुमि ताहा  
 लउ किंतु इहार अदिकाकाऊ करित ता। मालिक ऐ दृष्टि  
 शुनिया उर्पकु हइया ऐ भाओ हइते सातु अङ्गुलि मर्व  
 लहैया पूर्णांत्रे रामिल परे अतिशय लोकेते अक्षमाङ्गुलि  
 गुहन करियार बासनाते भाओर मरी पूर्वे हातु पुरेश  
 कराइल। तक्षलां ऐ भाओ निजमूर्ख आवरन मूर्ख  
 हइया ऐ मालाकारके लहैया अति बड़ी चलिल। ताहाते  
 मालाकार बेदनामूर्ख हइया काकुति नूदक

ମାନିଲ ହେ ତାଓ ଆମି ଆର ଦିନ ଲୋଭ କରିବ ନା ଆମାର  
ଇତ୍ତ ତାମ କର ଦୟା ଯେ ସର୍ବ ଲଈୟାଛି ତାହା ତୋଷକେ  
ଦି ତରି ଏହି କଥା କହାତେ ବିଜୁଇ ହଇଲ ନା । ତାହାତେ  
ମାନାକାର ବିଶେଷନା କରିଲ ଯଦି ଏହି ଦିନତାଓ ଆମାରେ  
ନଇୟ ଜନୟବୀ ମଧ୍ୟ କରେ ତବେ ଆମାର ପୂନ ବିଯୋଗ  
ହଇବେ ଏହି ଭାବେ ପାଦବ୍ୟେତେ ଏକ ବୃକ୍ଷ ବେଳନ କାର୍ଯ୍ୟ ରହିଲ ।  
ତିବିତାଓ ଯାଲାକାରେର ହସ୍ତ ବଲେତେ ଆକର୍ଷଣ କରିଲେ  
ଜ୍ଞାପିଲ ତାହାତେ ଏ ମାଲିକେର ଦୁଇ ବାହ୍ୟଲୋକାଟନ  
ହଇଲ ଏବଂ ମେଇ ବେଦନାତେ ଯାଲାକାରେର ପକ୍ଷତ୍ର ହଇଲ ।  
ମୁଦ୍ରାଗେରୀ କହିୟାଇନ ଯେ ଲୋକ ଦିନ ରିଘୟେ ସବର୍ଦ୍ଧ ଅତ୍ୱତ୍  
ଧାରେ ଏବଂ ପରାମର୍ଶ ମଂଧ୍ୟକୁ ଦିଵାକାଳୀଙ୍କ କରେ ମେଇ ବହୁାବ୍ୟ  
ଲୋକ କୃତନ୍ତ ମୁଖୀ ହୟ ନା ଏବଂ ଶେଷେ ବିପର୍ଦ୍ଧ ହୟ ।  
ଇତି ବହୁାବ୍ୟମ ମରାପ୍ତା ।

### ଅପ ମାରଦିନକଥା ।

ଯେ ପୁରୁଷ ନିଜ ଯୋଗ୍ୟତାତେ ଦିନ ଉପାସ୍କର କରିଯା ଅବହିନ  
ଭବକ ମେଇ ଦିନ ରମ୍ଭା କରେନ ତିନି ମାରଦିନକଥାପି ଧ୍ୟାତ  
ର ଆର କୃତନ୍ତ ଅର୍ପିନ ହନ ନା । ତାହାର ବିବରଣ ଏହି ।

କୁଞ୍ଚା ନାମବୌତେ ବୀରବିକ୍ରମ ନାମେ ଏକ ରାଜୀ ଛିଲେନ ।

तिनि निज शोग्राताते बिनोनीकुन रुदिल्ल ओ नीतिज्ञ  
 एवं वह पूर्ण कुल हइया सुप्रियते कालघास्त रुदेन। एवं  
 इन्हिते राजा प्रभुते शृणुत रुदितेजन एहे भग्न बोन  
 चीर रोदनेर श्रुति शनिया उष्मनां वाहिरे आसि। एवं  
 शुद्धनुमारे अनुमध्यान रुदिते नगर पुण्ये नवर्दी  
 मुद्री नवपूर्वती सर्वाभरन भूषिता आर उत्तम वश परि  
 दीता एयत एहे चीके देखिलेन। उपन लिंगकाल एवं  
 रुप कन्दन शुनिया सेहे चीके जिजामा रुदिलेन हे  
 मुद्रित तुमि केन रोदन रुदितेज। मुद्री रुदिलेन हे  
 पूर्ण तृष्ण आमि तोयार लक्ष्मी तुमि शुरु एवं नीतिज्ञ  
 उपर्युक्त एहे रामन एत दिवस पर्यन्त तोयार गृहेते  
 छिलाय मञ्चुति तोयार हाँग रुदिया अना माने याई  
 तेजि एहे हेतु रोदन रुदितेज। लक्ष्मी जिजामा  
 लिलेन इहाते केन रोदन रुदितेज। लक्ष्मी  
 उत्तर रुदिलेन ये एथन तोयार मृहेते रोदन रुदि  
 तेजि। राजा रुदिलेन हे लक्ष्मी यदि आयार पुति  
 तोयार मृह आजे उबे कि हेतु आमाके तोया  
 रुदितेज। अनन्त लक्ष्मी उत्तर रुदिलेन हे तृष्ण  
 तुमि आन ना ये आमि लक्ष्मी चाल। एहे रामन एवं

ତୁରକୁଳ ପାଇତେ ପାରି ନା ତାହାର ବୃତ୍ତାନ୍ତ ଶୁଣ ଶୁଦ୍ଧଇଲେ  
ଯେ କିମ୍ବା ଭୌତି ହେଉ ଲକ୍ଷ୍ମୀ ତାହାରେ ତଜିନା କରେନ ନା  
ଏବଂ ଯୁଦ୍ଧ ପୁରସ୍କର ନିରୁଟ୍ଟେ ଥାଇନ ନା ଆର ଯେ ପୁରସ୍କର  
ମୃଦୁ ସରବର୍ଦ୍ଦା ବିରୋଧି ହେଉ ତାହାର ନିରୁଟ୍ଟେ ଅବଶିଷ୍ଟି  
କରେନ ନା ଅତେବ ଲକ୍ଷ୍ମୀ ଚିର କୁଳ କୋନ ଶାନେ ଅବଶିଷ୍ଟି  
କରେନ ନା ଏବଂ କୋଣାଓ ଦୀର୍ଘ କୁଳ ବାସ କରେନ ଏହି ପୁରୁଷ  
ଲକ୍ଷ୍ମୀର ଅବଶିଷ୍ଟି ଆର ଗମନ କାହାରେ ଅନୁଯେତ୍ୟ ହେ  
ନା । ରାଜା ଏହି ସକୁଳ କଥା ଶୁଣିଯା ବିବେଚନା କରିଲେନ  
ଯେ ଅନୁପୁରୁଷ ବ୍ୟବହାର ନା କରିଲେ ଲକ୍ଷ୍ମୀ କୋନ ଲୋକଙ୍କେ  
ଆଗ୍ରହ କରେନ ନା ଆମାର କି ଅନୁପୁରୁଷ ବ୍ୟବହାର ଆମା ବର୍ତ୍ତ  
ପୁରୁଷା କିମ୍ବା ଆମାର କୋନ ଦୋଷ ନାହିଁ । ପଞ୍ଜିତରା କହି  
ଯାଇଲେ ଯେ ରାଜାର ଅପୁରୁଷା ଓ ବର୍ତ୍ତପୁରୁଷା ଏହି ଦୁଇ ଅନୁ  
ପୁରୁଷ ଅପୁରୁଷାର ଦଂଖଲାଖ ହେଉ ଆର ବର୍ତ୍ତପୁରୁଷାତେ ବିରୋଧି  
ଅବଶିଷ୍ଟି ହେଉ ରାଜାର ପୁରେଣ୍ଯ ଭୂମିଲାଭ ଓ କୌଣସିଭେଦ  
ଗମିଷେ ସରବର୍ଦ୍ଦା ବିରୋଧି କରେନ ତାହାରେ ଲକ୍ଷ୍ମୀ ତାହାର  
ଦ୍ଵାରା କିମ୍ବା ଭୌତି ପାଇନ ନା । ଅନ୍ତରେ ନରପତି ନିବେଦନ କରି  
ଦିନ ହେବିଲେ ଯଦି ତୁମ୍ଭା ଅନ୍ତରେ ଯାଇଟୁ ଇଚ୍ଛା କର ତାହେ  
ତାହାର ଲୋମ୍ବାର ଗମନ ବାରନ କରିତେ ପାରିବେ ଯେ  
ତାମାର ଇଚ୍ଛା ହ୍ୟ ମେଇ ଶାନେ ଯାଓ କିନ୍ତୁ ଆମ ଏକ

वर प्राप्ति। किंतु अनुग्रह पूर्वक आशाके सेइ दृष्टेः  
 श्वर लक्ष्मी उत्तर करिलेन तुमि पदि आशार गमनेर  
 निषेदि ना कर तवे तोशार ये वर प्राप्तिये हय तोह  
 श्वर आशार अवाक्त्र गमनेर बाबन तिन्ह ये वर चाहिए  
 आयि तोहाइ दिव। राजा कृताञ्जलि हइया नवदेव  
 करिलेन हे भगवति आशार गृहे परिजनेरदेव कृपनउ  
 अनेक्य ना हय तुमि एই वर आशाके देव। लक्ष्मी  
 राजार कृपा शुनिया उत्तर करिलेन ये हे राजन पदि  
 तोशार गृहे परिजनेरदेव अनेक्य ना हय तवे कि  
 पुकारे आशार अन्य शाने गमन हइवे आयि नदीर नाय  
 नीठगा। एवं बिद्युत्तर नायि अस्त्रिया किंतु आयि येषत  
 नायायनेर प्रियतमा हइया तोहार निकटे तिर बाल आसि  
 सेइ मत नीतिशालि राजार अति प्रियतमा हइया तोहा?  
 तिकटे दीर्घ बाल थाकि एवं अनीति किम्बा कलह एই  
 दूड़े शिरोरात्रे तोहार निकटहइते गमन करि ना अतवै  
 आयि अनाक्त्र थाइते पारिलाय ना। इहाँ कहिया लक्ष्मी  
 नरपतिके ए वर मिया राजार गृहे तिर बाल छित्र  
 हइया थाकिलेन। इति सावधानकृपा। यहेह पूर्व  
 आदर्शन पर्याप्त दिनकृपा मराओ। —

କୃପାଲୋକେବା ସିନବଳ ହଇୟା ପୁରୁଷ ଲକ୍ଷଣାକ୍ରମ ନଥ କିନ୍ତୁ  
ଶୁଭେ ପ୍ରମର୍ଦ୍ଦକମ୍ୟ ତାହାରଦେର ଲକ୍ଷଣ ରହିଯାଇଛି ।—

### ଅପି କାମକୃପା ।—

ଶୀର୍ଷେ ପାଞ୍ଜିତରୀ ରହିଯାଇଛନ୍ତି ଯେ ପୁରୁଷେର ପ୍ରିୟାତୁରାଗ ମାତ୍ର  
ତାବ ହୁଁ ଏବଂ ଯିନି କାମିନୀର ଆଶ୍ଚର୍ଯ୍ୟ ହନ ତାହାର ପ୍ରିୟାତୁ  
ରାଗ ଉତ୍ସବପେ ଧ୍ୟାତ ହୁଁ ଏବଂ ତିନିଇ କାମଶାସ୍ତ୍ର ସମାଜ  
ଜୀଜୀ ଜନ୍ୟ ମୁଖ୍ୟ ଭୋଗୀ କରେନ । ଅର୍ପର ତ୍ରିବର୍ଗେର ମଦ୍ୟୀ  
କାମ ଉତ୍ସବ ପୁରୁଷାର୍ଥ ଏବଂ ବିର୍ମାର ଓ ଅର୍ପେର ଫଳବନ୍ଧକ ଯେ କାମ  
ତାହାତେ ଯେ ପୁରୁଷ ଆସନ୍ତ ହାତ ତୀହାର ନାମ ଦାସୀ ପୁରୁଷ  
ମେହି କାମି ନାୟକ ନୀତି ପୁରୁଷ ତାହାର ବିଭାଗ ଏହି । ଅନୁକୂଳ  
ଏବଂ ଦକ୍ଷିଣ ଓ ବିଦ୍ଯନ୍ତ ଆର ଦୂର୍ତ୍ତ ଓ ଦୁଷ୍ଟ ଏହି ନୀତି ପୁରୁଷ  
ନାୟକରଦେର ମଦ୍ୟୀ ପୁଣ୍ୟମତ ଅନୁକୂଳ ନାୟକେର ରୂପ କହା  
ଶାଇତଙ୍ଗେ ।—

### ଅପି ଅନୁକୂଳ ନାୟକକୃପା ।—

ଯେ ପୁରୁଷ ନିଜ ଭାର୍ଯ୍ୟାତେଇ ଅନୁରକ୍ତ ଏବଂ ପରମ୍ପରାତେ  
ଶୀର୍ଷୀୟ ହନ ମେହି ପୁରୁଷ ଅନୁକୂଳ ନାୟକ କମେ ଧ୍ୟାତ  
ହନ । ତୀହାର ଇତିହାସ ଏହି ।—

ଶୁଦ୍ଧ ନାମେ ଏକ ରାଜୀ ଏବଂ ମୁଖୀଲମା ନାମେ ତୀହାର  
 ଏକ ରାଜୀ ଜିଲେନ ଏବଂ ଏକ ରାଜୀ ଓ ରାଜୀ ଏହି ଦୁଇ ଜନର  
 ଯୋବନ କାଳେ ପରମ୍ପରା ଅଭିଶପ୍ତ ମୈଥି ଦୂରେ ଆନନ୍ଦ  
 ଅନ୍ୟ ଘୁରୁତ୍ବକୁ ନିରୀକ୍ଷଣ କରିତେ ଇହା କରେନ ନା ଆରମ୍ଭେ  
 ପତିଦୁଃଖ ରାଜୀଓ ଅନ୍ୟ ଘୁରୁତ୍ବକୁ ଦର୍ଶନ କରିତେ ସମନ କରେନ  
 ନା । ଏବଂ ମିତୀ ଓ ରାମ୍ୟର ନାୟ ବିହିତ କୀତା ଅନ୍ୟ ମୁଖୀ  
 ନୂଭବ କରିଯା କାଳମୂର୍ତ୍ତିନ କରେନ । ଭରତ ନାମୀ ପଞ୍ଚିତ  
 ଶ୍ଵେତା ଓ ପରକୁଣ୍ଡା ଏବଂ ମାଯାନା ଏହି ତିନ ପୁଣ୍ୟର ନାୟିକାର  
 ଦିଗେର ଲକ୍ଷଣ କହିଯାଇଛେ । ତାହାର ଯଦ୍ୟ ଶ୍ଵେତାର ଲକ୍ଷଣ  
 ଏହି ଯେ ରମନୀ ସ୍ଵାମିର ମଙ୍ଗଦ ମମୟ କିମ୍ବା ବିନ୍ଦ ମମୟ  
 ଅପରା ମରନେ ସ୍ଵାମିଙ୍କୁ ଡ୍ରାଗ୍ ନା କରେନ । ଏବଂ ମେଇ  
 କ୍ରୀଡ଼େ ଯଦି ସ୍ଵାମିର ଆନୁରାଗ ଥାକେ ତବେ ପଞ୍ଚିତର । ମେଇ  
 ରମନୀଙ୍କେ ଶ୍ଵେତା କରେନ ଏବଂ ଶ୍ଵେତା ପୁରୁଷଙ୍କୁ ଜନ୍ମେର ପୁଣ୍ୟ ହେଉଥି  
 ଏମତ କ୍ରୀକେ ପାନ । ଅନନ୍ତର ମେଇ ଅନୁକୂଳ ନାୟକ  
 ଶୁଦ୍ଧ ରାଜୀ । ଏବଂ ଶ୍ଵେତା ନାୟିକା ମୁଖୀଲମା ରାଜୀ ତୀହାର  
 ଦୁଇ ଜନ କାମକଳା କୋତୁରୁପକୁ ଇହୟ ମରେବରେ ମଯିପେ  
 ଲତାନିର୍ମିତ ଯନ୍ତ୍ରିର ଥାକ୍ରିଯା କାମ ଶାକ୍ରାବିରୋଧ କୀତା  
 କରତ କିଞ୍ଚିଥ କାଳ ଯାପନ କରିତେଇନ । ଏକ ମମୟ  
 ରାଜ୍ଞିର ପୁଥି ପୁରାତୌଡ଼େ ଏକ କାଳମୂର୍ତ୍ତି ଉତ୍ସମ ଶପାତ୍ର

ନିଦ୍ରିତ ରାଜମହିଷୀକେ ଦଂଶ୍ଖ କରିଲ ।      ରାଜା ତାହା  
ଦେଖିଯା ଆତାହୁ ଶୋକାକୁଳ ଇଇଲେନ ପରେ ଅମେର ଯତ୍ନ ଓ  
ମର୍ବସ୍ଵ ସମ୍ବ୍ରଦ ସମ୍ବନ୍ଧ କରିଯା ଏବଂ ଉତ୍ତର ବୈଷ୍ଣବ ଆନିଧୀ ନାନା ଓବଦୀ  
ପୁରୋଗୋତେ ରାଜ୍ଞୀର ପୁନଃ ରକ୍ଷା କରିଲେନ କିନ୍ତୁ ବିଷେର ପୁନ୍ଥା  
ଶକ୍ତିତେ ରାନୀର ମୌନର୍ଯ୍ୟର ବିପରୀତ ଇଇଲ ତାହାର ବିବରନ  
ଏହି ଉତ୍ତର କେଣ୍ଟୁକୁ ମନ୍ତ୍ରକୁ କେନ୍ତରିତ ଇଇଲ ଏବଂ ଠନ୍ଡୁଠନ୍ଦୁ  
ମୁଖ କାକମୁଖେର ନୟ ଇଇଲ ଓ ପୁନ୍ତଃ ମସ୍ତ୍ୟ ମଲିଲମ୍ବ  
ଅଂଶଲେର ନୟ ଚକ୍ରକୋଟିରଗୀତ ଇଇଲ ଆର କମଳେର ନୟ  
ମୁଣ୍ଡିଙ୍କି ଶରୀର ଅତି ଦୂର୍ଗଞ୍ଜି ଇଇଲ ।      ପରେ ରାଜା ଅତିଶ୍ୟ  
ଆନୁରାଗୀ ପୁଷ୍ପକ ରାନୀର ପୁର୍ବ ମୌନର୍ଯ୍ୟ ଏବଂ ପୁର୍ବକୃତ ସା  
ପାଇ ମ୍ୟାନ କରିଯା ତୀରାର ବୋଗେର ଚିକିତ୍ସାର୍ଥ ପୁନ୍ତୁ ଇଇଲ୍ଲା  
ଏ କୁଦ୍ରା ମହିଷୀକେ ଏହି କଣ ଯାତ୍ର ଚକ୍ର ଆଗୋଚର କରେନ ନା  
ଏବଂ ଶୁଦ୍ଧିତ ଇଇଲେ ଆହାର କରେନ ନା ।      ଓ ନିଦ୍ରାର ନିଶ୍ଚିତେ  
ନୟ କରେନ ନା ଶୋକେତେ ଦାକୁଳ ଇଇଯା ଚିତ୍ରପୁତନିରାର  
ନୟ ମରରଦା ରାନୀର ତିରଟେ ପାଇନ ।      ଯଦିରା ରାଜାକେ  
ଏ ପୁକାର ଦେଖିଯା କହିତେ ଲାଗିଲେନ ହେ ମହାରାଜ ରାନୀ  
ଦେଖିପାଇ ଏହି ପୁକାର ପୀଡ଼ିତା ଇଇଯାଇନ ଇହାତେ ମନୁଷ୍ୟ କି

कुरिते पारिवे आउ एव आमार्य बस्तु उपेक्षा कराइ ओहु  
 इय आपनि ममूलु नर्याङ्कु पूपिदीर शामी केत राज्ये  
 शुताशुत चित्रा करेन ना। एवं यृतकला एই चीर निश्चिते  
 इन एत कला भोगी कुरितेजेन ए अनुचित राजा तिर  
 जीवी आकिले एই राजीह इते अदिक रपनवती कुत चो  
 शिलिरे आर आमार अनेक विवाह इते पारिवे आउ  
 एव आपनि विषाद करिबेन ना। आर राजा र पूरव महित  
 शुभाश्रावा कोटेर नाये परमायु ताहा मूर्ख रामारु  
 दिना दृष्टि यापन करा उपेक्षु इय ना। राजा ए महल  
 कृपा शुनिया ओहु कुरिलेत हे मन्त्रिनि आमार कृपा शुत  
 आमार एहि ये विर्यन्त्रु इनि आमार शुभा कार्योर महाया  
 एवं पाप मुग्नेर भागिनी ओ मंसारेर मूर्खमूल आर  
 पूनमर्यान। इनि यृतकला इयाओ यावं जीविता  
 आकिलेन तावं आमि निरस्तु रानीर निरुटे आकिल  
 ताहा तागी कुरिया यरठनेतो आमार अदिकार नाई  
 राजा चित्राते कि अदिकार अपन आमार शुभा वियोगी  
 इहेले यदि रानी कि मह यरन ना कुरिया कुबल दृष्टिनी  
 इन तावे रानी कि शुकार प्रेय एवं ये श्रीतिर विछुदे ओ  
 विमरण इय मे कि रन प्रीति आर श्री मूर्खषेत रहै

একেব বিদ্বুদে আনা যদি অনুয়ৰণ না করে তবে সে কি  
দাঙ্গতা যদি অনুযৰণ করে তবে ওগুম দাঙ্গতা। যদি  
রাজী ঘৰেন তবে আমি কি রাজ্য চিন্তা অথবা আনা স্বী  
কাঞ্চু কৱিব হে মঙ্গিন শুন পুকুৰে যে পুঁথি বিবাহ সে  
জৈশুনিবৰ্ক্ষ এৰং যে দ্বিতীয় স্বী পঁঠিগুহ সে লক্ষ্মা পঁঠি  
ত্যাগৰূপ কুৰুম্ব তাহা আমি রূপনও কৱিব না এবং  
এই মহিমা বাতিৱেকে আমি পুন দীৱন কৱিব না তাহা  
কহিতেছি আমি যে রাজীকে এক ফন বিস্ময়ে কৱিতে  
পারি না এবং যাহাকে দৰ্শন কৱিয়া ও আমাৰ নেত্ৰদৱেৰ  
তৃষ্ণি শেষ ইয়ে না আৰ্থ আৰাঙ্গ নিবৃতি ইয়ে না ও  
যাহাৰ অধীয়ামৃত পান কৱিয়া পবিত্ৰ ইয়ে জন্ম সাৰ্পক  
কৱিতেছি সেই স্বী আমাৰ পুনৰূপা আৱ যে এই জীবিত  
স্বীৰ কোৱন এত বিলাপ কৱিতেছি তাহাৰ বিদ্বুদে আমি  
যদি আপনায় জীবনেছা কৱি তবে আমি ঢাঁলতুলা  
হইব। মঙ্গিন রাজাৰ কৃতি শুনিয়া বিবেচনা কৱিলেন  
লেনৰপতি রাজীৰ মৰণেতে আপনার মৃত্যু স্বীকাৰ কৱি  
হেন ইহাতে ওদ্বিগ্ন চিত হইয়া পুৱৰ্মা কৱিলেন যে রাজীৰ  
পুনৰুক্তাতেই রাজাৰ রক্ষা হইবে এবং রাজা পাহিলেই  
আহুতি সন্তাপ পাহিব এতেব যাহাতে রাজীৰ মন্ত্ৰ হয়

मन्दर्भतोत्तावे ताहाइ कुरुवा एই अवदारित करिया  
उत्तम् विष्वैदेहरदिगीके ताक्षिया रानीर पुनर्बर्ध चिकित्सा  
स्थु करिलेन। ताहाते एक नागबद्धि ऐ चिकित्सा  
रानीर शहीरे आविर्भूता हईल। मेहे समय रानी  
विषज्ञाला पाइया उन्मातार नायि नृता करिते रुहिते  
नागिनेत ये हे नरपति तुमि पृथिवी शासन करितेज  
किन्तु एक बाबी आमार ब्राह्मी नागीके नष्ट करियाओज  
ताहाते आमि विदिवा इहिया एवं लोकेते अतिकाउग  
हइया परायश्च करिलाम ये बाबिर पुतीकार करिब किन्तु  
बाबी अतिकृद्धु एवं आमार ब्राह्मी ये नागि तिनि राज  
मद्दृश बाबी ऊहार ऊला शत्रु नहे एই कारन आमि स्वयं  
बाबिर पुतीकार करिब ना ये हेतुकु अमद्दृश बैरिबद्धेते  
बैरेण्ड्रार हय ना अतएव राजाके लोकाकुल करिया  
ताहार दारा बाबिके नष्ट करिब एই विवेचना करिया  
रानीके दृश्यन करियाओजि। अनहुर नरपति उत्तर करि  
लेन हे नागभृति आमि एই सम्बाद जानि ता इहाते  
आमार कि अपराधि यदि तुमि आमार अपराधि मिर करिया  
मारुडपाणि मेहे अपराधि स्थाकरा तोमार उपेत्तु हय  
हेनना प्रयः अज लोकेन अपराधि मार्जना करेन अजः

तुमि भातिबुडा एवं विर्माणला मन्त्रुति आम्यार डोर्याके  
हिम्मार्थे जागी करह । नागीबद्दु राजार विनयवाक्य  
शुनिया कहिल हे महाराजा यदि तुमि रानीर जीवनेहा कर  
उवे रानीर प्रानेर परिवर्ते आपन सुन दान कर ताहा  
देखिया आमि रानीके त्याग करिव । राजा ए रुपा शुनिया  
आहादित हइया उत्तर करिलेन हे नागीबद्दु आमि रानीर  
मन्दिलार्थे अवश्य प्रान दिव इहा कहिया निज यस्तु क्रृत  
करिते घड्या ग्रहन करिया ए घड्या कण्ठेर निरुटे रांगिया  
कहिलेन ये मन्त्रुति प्रेयमीर प्रेयते रहित ये आम्यार  
प्रान मे प्रान वायरुन ये मूल्य उद्धारा प्रेयमीर प्रेय  
आम्यार कीत हड्क । नागीजी एहे कृपा शुनिया कहिल हे  
महाराज तुमि प्रान त्याग करिओ ना डोम्यार एहे ये  
श्रियानुवाग आहाते आमि मनुष्टा इलाय आर रानीके  
त्याग करिलाय तुमि एक पूरतीर नियिते मागीर पर्याप्त  
पूर्पिवार राजत् एवं ओकृष्ट मोक्षर्य ओ परमैश्वर्य  
लोग एहे समूदाय त्याग करिते ओप्रत इहेच अतप्रव  
तुम्ही उत्तम नायक डोम्यारदिग्देर ये पुकार प्रीति जन्मा  
उवे आम्यार ए पुकार प्रीतिलाभ हड्क एहे कामनाते  
आमि श्वामि प्राणि नियिते अनुमरुन करिव इहा कहिया

स्वस्थाने गोल। अनन्तर नामवद्वारा आविभावनहित। राजा  
शत्रुघ्नी योग्यवरबनहित हैते मुकु उन्द्रेत नाय मुकुर शत्रुघ्नी  
नाइया पूर्वहिते अविकृ दक्षवती हैलेन। राजा ३ प्री  
महोदेशकृष्ण विपद्धहिते उत्तीर्ण हैया परमानन्द राजीर  
सहित राजा मूर्खानुत्तर करिते लाग्निलेन। याग्निर  
मणि प्रे मन्त्रिति से पूर्वकपिता हैले येषत् ए वसु  
शामिर मूर्खायिका हय मेह दक्ष राजी विपद्माग्निराजीर्ण  
हैया एवं पूर्वहिते अविकृ दक्षवती हैया राजा र  
मूर्खायिनी हैलेन। इति अनुकूल नायककृपा ममाञ्च।

### अथ दक्षिण नायककृपा।—

ये पूर्व पूर्वान श्वीर प्रीतिते रग्नि हैया ओ अन्य शत्रु  
श्वीर सहित कीड़ा करेन एवं ताहारदिग्गेर सहित  
कीड़ा कराते अन्य छित्र ना हैया मेह विर्मनभूर गोरव  
करेन तिनि दक्षिण नायककृपे ल्पात हन। ताहार  
इतिहास एই।—

गोड़ देशे लक्ष्मनमेन नामा एक राजा जिलेन ताहार  
इत्तुन्ता नाम्य एक नाट्रराजी एवं अन्य रुत लिलि भोग्या  
क्षी जिल। मेह नन्दिनी ए छित्रिनी प्रजूति भोग्या